

ज्ञानमृत

वर्ष 55, अंक 1, जुलाई, 2019
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये



शान्तिवन (आबू रोड)- 'परमात्म ज्ञान से नया युग' विषयक कार्यक्रम का भव्य शुभारम्भ करते हुए प्रथम लोकपाल भ्राता पिनाकी चन्द्र घोष, ब.कु.निर्वैर भाई, ब.कु.मृत्युंजय भाई, जस्टिस वी.ईश्वरैया तथा अन्य।



ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- शिक्षा सेवा प्रभाग की ओर से आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए एम.एच.आर.डी., इनोवेशन सेल, ए.आई.सी.टी.ई.निदेशक भ्राता मोहित गंभीर, तमिल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.गणपति भास्करन, गुजरात यूनिवर्सिटी के कुलपति भ्राता हिमांशु पण्डया, ब.कु.मृत्युंजय भाई, ब.कु.शीलू बहन तथा अन्य।



1.शिमला- विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाग की ओर से आयोजित 'खुशनुमा जिंदगी' विषयक राष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता आचार्य देवव्रत, लेडी गवर्नर बहन दर्शना देवी, ब्र.कु.भ्राता मोहन सिंघल, ब्र.कु.भ्राता भारतभूषण, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन, ब्र.कु.ज्योति बहन तथा अन्य। 2.बल्लारी- विजयनगर श्रीकृष्णदेवराय यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो.एम.एस.सुभाष द्वारा, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को दी गई ऑनरेरी डॉक्टर ऑफ लिटरेचर डिग्री को, दादी जी की तरफ से प्राप्त करते हुए ब्र.कु.मृत्यंजय भाई। 3.बलिया- उ.प्र.के मुख्यमंत्री भ्राता योगी आदित्यनाथ को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.पुष्पा बहन। 4.देहरादून-उत्तराखण्ड के कृषि मन्त्री भ्राता सुबोध उनियाल, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए। साथ में ब्र.कु.मन्जू बहन। 5.राजपुर- विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधा रोपण करते हुए म.प्र.के गृहमंत्री भ्राता बालाबच्चन तथा ब्र.कु.प्रमिला बहन। 6.पानीपत (ज्ञान मानसरोवर)- समाजसेवा प्रभाग अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा के यातायात मंत्री भ्राता कृष्णलाल पंवार, ब्र.कु.अमीरचन्द भाई, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.सुन्दरी बहन, ब्र.कु.भारतभूषण भाई तथा अन्य। 7.नवरंगपुर- उड़ीसा की हैण्डलूम, कपड़ा और हस्तशिल्प राज्यमंत्री बहन पद्मिनी दिअण को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.गीता बहन तथा ब्र.कु.राखी बहन उनके साथ। 8.जनकपुर (नेपाल)- आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में हैं प्रदेश नं.2 के भौतिक पूर्वाधार विकास मंत्री भ्राता जितेन्द्र सोनल, ब्र.कु.कमला बहन, राज्यमंत्री भ्राता सुरेश मण्डल, सांसद भ्राता परमेश्वर साह तथा भ्राता पुण्य प्रताप यादव।



पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित ज्ञान के सागर, निराकार परमपिता परमात्मा शिव की कल्याणकारी वाणी से जन-जन के हृदय को आलोकित करने वाली ज्ञानामृत पत्रिका विश्व-सेवा के 54 सफल वर्ष पूरे कर 55वें वर्ष में प्रवेश कर रही है, यह अत्यन्त हर्षकारी विषय है।

जीवन-पथ की दिशाहीन दौड़ से थके-हारे पथिक को ज्ञान की चन्द बूँदें पिलाकर तरोताजा कर देने वाली ज्ञानामृत पत्रिका अतुलनीय है। अप-संस्कृति की बाढ़ में बहे जा रहे मानव के लिए यह दिशासूचक है। पारिवारिक शान्ति और सद्भावना की अचूक औषधि है।

विज्ञापन रहित होते हुए भी सदा मुनाफे में चलने वाली यह पत्रिका जन-जन की चहेती बन चुकी है। समाज के हर वर्ग और हर व्यवसाय के उत्थान के लिए यह अनेकानेक प्रेरणाएँ अपने में समेटे रहती है। इसमें छपे लेख हमारी परख शक्ति और निर्णय शक्ति का विकास करते हैं। अन्तर्मन में झाँकने और वहाँ शक्तियों का निवेश करने का मार्ग ज्ञानामृत से अच्छा और कौन बता सकता है। स्वार्थ छोड़, सेवार्थ निरन्तर गतिशील इस पत्रिका का एकमात्र ध्येय परोपकार ही है।

युवाओं की पथप्रदर्शक, वृद्धों की सहचरी, बच्चों की प्रेरक, नारियों को नारायणी बनाने वाली इस पत्रिका

को सभी राजयोगी भाई-बहनें गाँव, शहर, गली, मोहल्ले तक पहुँचाने की सेवा अथक होकर करते रहते हैं और आगे भी करते रहेंगे, ऐसी मेरी

शुभकामना है। जो भाई-बहनें लेखों के रूप में नवीन विचारों की गुलाबाशी करते हैं, जो इसके रूप को सजाते-निखारते हैं, जो इसे लोगों तक पहुँचाकर लोकप्रिय बनाते हैं, जो इसे पढ़कर अपना और दूसरों का सशक्तिकरण करते हैं, उन सबको मैं कोटि-कोटि बधाई देती हूँ।

वर्ष 2019-20 के लिए, उत्साही पाठकों प्रति यही सन्देश है कि शान्ति की गहरी अनुभूति द्वारा प्रतिकूल बातों को भी अनुकूल बना लें। परमपिता परमात्मा से मन-बुद्धि की तार जोड़कर प्रतिदिन साइलेन्स की शक्ति अपने में भरें और बाँटें। संसार की शान्ति की प्यास तृप्त करना महापुण्य है। बापदादा के वरदहस्तों से प्रारम्भ हुई, हम सबकी यह प्यारी पत्रिका दिनोदिन और अधिक ज्ञान प्रकाश फैलाए और सारा जग रोशन हो जाए।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

बी.के. जानकी

अमृत-सूची

● शुभाशीष	3	● राजयोग की उपलब्धियाँ	23
● गुणों की गहराई (सम्पादकीय)	4	● आओ लौट चलें	24
● यज्ञ-रक्षक राजयोगिनी दीदी मनमोहिनी	7	● राम-राज्य की महिमा अपार (कविता)	25
● पत्र सम्पादक के नाम	8	● चिल्लाओ मत, प्रयत्न करो (अनुभव)	26
● एक स्वच्छता यह भी	9	● जेल बनी रूहानी पाठशाला (अनुभव)	26
● श्रद्धांजलि	9	● विचार परिवर्तन से विश्व परिवर्तन	27
● भोली को मिला भोलानाथ (अनुभव)	12	● कैसे पूरी हो शान्ति की तलाश?	28
● अद्वैत का आनंद	14	● सचित्र सेवा-समाचार	29
● लुप्त हुई आभायें हैं (कविता)	16	● एकमत से विजय	30
● बाबा ने दुःखों से लड़ना सिखाया (अनुभव)	17	● ट्रिपल जैकेट ऑफ साइलेन्स	31
● सुख-शान्ति का आधार सहज राजयोग	18	● सचित्र सेवा-समाचार	32
● बाबा ने मुझे डबल डॉक्टर बना दिया (अनुभव)	22	● आवश्यक सूचना	34

गुणों की गहराई

हरेक अध्यात्मवादी मनुष्य यह चाहता है कि उसके जीवन में दिव्य गुणों की धारणा हो और दिव्यता का पूर्ण उत्कर्ष हो। परन्तु हम देखते हैं कि इस पुरुषार्थ में बहुत कम ही लोगों को यथेष्ट सफलता मिलती है। इसका कारण क्या है?

ध्यान देने पर आप देखेंगे कि बहुत बार प्रत्यक्ष रूप में तो ऐसा लगता है कि अमुक मनुष्य किसी दिव्य गुण को धारण किये हुए है परन्तु वास्तव में उसकी धारणा दिव्यता रूपी बुनियाद पर नहीं होती बल्कि किसी लौकिक अथवा मायाजनित संस्कार पर होती है। दूसरे शब्दों में, गुण के साथ-साथ उसे कुछ घुन भी लगा होता है। वह घुन उसके गुण को पनपने नहीं देता बल्कि उसके गुण रूपी वृक्ष पर पराश्रयी बेल की तरह लिपटा रहता है तथा उसका शोषण करता रहता है। अतः हमें चाहिए कि हम अपने मन को टटोलें कि हमारे दिव्य गुण को कोई घुन तो साथ में नहीं लगा हुआ। जब हमारा वह दिव्य गुण अपने शुद्ध स्वरूप में होगा तभी सही अर्थ में हममें दिव्यता का उत्कर्ष होगा। हम यहाँ कुछेक उदाहरणों द्वारा इस भाव को व्यक्त करेंगे -

स्पष्टवादिता

लोगों के सम्पर्क में आने से, आप जानते ही होंगे कि कुछ लोग कहते हैं, हम तो सरल स्वभाव के हैं। जो बात जैसी होती है, हम तो उसे सच्चाई से साफ-साफ कह देते हैं। हम झूठ क्यों बोलें; हमें किसी का डर थोड़े ही है? हम तो अन्दर-बाहर से एक हैं। अब निस्सन्देह स्पष्टवादिता, सच्चाई और मानसिक सफाई तो दिव्य गुण हैं परन्तु हम देखते हैं कि कहीं-कहीं स्पष्ट वक्तृत्व रूपी गुण के मूल में कई बार गम्भीरता का अभाव, धैर्य की कमी, दूसरे को गलत सिद्ध कर उसकी मान-हानि करने का विचार, अपनी ही बात को सत्य सिद्ध करने का

अहम् भाव और इस प्रकार के अन्य कई त्याज्य-भाव समाये होते हैं। ये सब घुन उस गुण को शुद्ध रूप में विकसित नहीं होने देते। अतः जहाँ उस व्यक्ति के जीवन में बेधड़क होकर बात करने का गुण पनपता है वहाँ उद्दण्डता, अभद्रता, कटुता, विवादप्रियता आदि घुन अथवा अवगुण भी पनपते हैं क्योंकि कई पुरुषार्थी इस बात से लापरवाह होते हैं कि उनकी इस स्पष्टवादिता का आधार दिव्यता पर नहीं है। हमें चाहिए कि हम देखें कि हमारी स्पष्टवादिता में कटुता, उद्दण्डता या दूसरे को मान-हानि पहुँचाने का भाव तो नहीं है।

सादगी

आपने देखा होगा, कई लोग कहते हैं कि हम औपचारिकता अथवा तकल्लुफ में विश्वास नहीं करते। वे मन में सोचते हैं कि हम तो मिलनसार हैं, स्नेही हैं और दिखावे तथा कृत्रिमता से दूर हैं। वे किसी के आने पर न ठीक तरह से अभिनन्दन करते हैं, न उसके जाने पर शिष्टता को व्यवहारित करते हैं। इस प्रकार उनके मन में जो दूसरों के प्रति आदर-भाव की कमी है अथवा शिष्टता का जो अभाव है, उसको न समझते हुए वे कहते हैं कि हम तो सबसे घुलमिल जाते हैं; हम में आत्मीयता तथा बन्धुत्व है। अतः अनौपचारिकता के साथ-साथ उनमें मर्यादा की कमी, शालीनता का अभाव, अपेक्षित सत्कार करने के प्रति कर्तव्यविमुखता करने के संस्कार भी घुन की तरह रूहानियत को खोखला करते चले जाते हैं। अतः हमें सदा अपने ऊपर ध्यान देना चाहिए कि सादगी और आत्मीयता के साथ-साथ दूसरों को आदर-सत्कार देने का गुण भी होना चाहिए वरना उस रूखी

सादगी और थोथी आत्मीयता से हम कई लोगों को बेगाना बना लेंगे और दिव्यता की बजाय हम रुक्षता तथा गँवारूपन की सीमा में प्रविष्ट हो जायेंगे।

दूसरों का सत्कार और आतिथ्य

ऐसे भी लोग हैं जो दूसरों का आदर-सत्कार करते हैं और उनसे मधुर वचन भी बोलते हैं परन्तु वास्तव में उनके व्यवहार के मूल में उस व्यक्ति से अपना काम निकालने का ही भाव समाया होता है। इसलिए उनका यह दिव्य गुण तो स्थिर हो नहीं पाता, साथ में स्वार्थ और चाटुकारिता के घुन भी उनकी दिव्यता को खाने लगते हैं।

गम्भीरता

और देखिए। एक व्यक्ति आजकल कम बोलता है। हम जब उसे कहते हैं कि 'आजकल तो आप प्रायः शान्त रहते हैं' तो वह कहता है, 'हमें मुँह-फट बनना अच्छा नहीं लगता, हम तो अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं। जहाँ जितनी आवश्यकता होती है, वहाँ उतना ही बोलते हैं। हम इधर-उधर हरेक जगह बात करना परन्द नहीं करते। अधिक बोलने का फायदा ही क्या है? गम्भीर रहना ही अच्छा है।' वह सोचता है कि अब मैं अन्तर्मुखी बनता जा रहा हूँ और दिव्य गुणों की धारणा के पुरुषार्थ में लगा हूँ। अब, निस्सन्देह, गम्भीरता तो एक बहुत अच्छा गुण है परन्तु किसी-किसी मनुष्य का कम बोलना 'अन्तर्मुखता' और 'गम्भीरता' के कारण नहीं होता बल्कि इस कारण होता है कि वह कई लोगों से रूठा हुआ होता है। रुष्टता के कारण उसके मन में घृणा की लहर होती है; इसलिए उस मूड में वह किसी से भी बात नहीं करना चाहता। दूसरे शब्दों में उसका मौन अथवा अल्प-वक्तृत्व गम्भीरता रूपी दिव्यता पर आधारित नहीं होता बल्कि रूठना रूपी संस्कार पर होता है। तो यह बात निर्विवाद है कि हम गम्भीरता तथा अल्प वक्तृत्व का गुण धारण करें परन्तु साथ में यह देख लें कि उसे रुष्टता का घुन तो नहीं लगा।

सन्तुष्टता

इसी प्रकार, कोई व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति या

परिस्थिति में कहता है कि 'मैं तो सन्तुष्ट हूँ।' जब कोई उससे पूछता है कि 'आप कैसे हैं', तो वह कहता है, 'मैं ठीक हूँ।' परन्तु, गम्भीरता से विचार करने पर मालूम होता है कि उसकी इस सन्तुष्टता की बुनियाद में आलस्य, पराक्रम की कमी अथवा कृत्रिम सन्तुष्टता होती है। अपने मन में तो वह व्यक्ति जानता है कि जैसा पुरुषार्थ वह कर रहा है, उससे वह सूर्यवंश का स्वराज्य पद प्राप्त नहीं कर सकता तो भी यह सोच कर कि चन्द्रवंश का स्वराज्य पद भी कोई कम तो नहीं है, वह स्वयं को दम-दिलासे से सन्तुष्ट कर लेता है। ऐसी सन्तुष्टता न उसे कल्याण की पराकाष्ठा पर ले जाती है, न ही दूसरों को दिव्यता की ओर प्रेरित करती है। सन्तुष्टता के साथ हमें पराक्रमी, उद्यमी, तीव्र पुरुषार्थी और परोपकारी भी होना चाहिए। यदि हमारी सन्तुष्टता इनसे रहित होगी तो उसे 'पुरुषार्थहीनता और स्वार्थ' का घुन लगा होगा और वह सन्तुष्टता हमारी उन्नति तथा बहुमुखी विकास में बाधा होगी। वह दिव्य गुणों के उत्कर्ष की ओर ले जाने वाली नहीं होगी।

दूसरों का सुधार करने का संकल्प

कुछ लोग कहते हैं कि 'अमुक व्यक्ति की अवस्था अथवा उसकी कृति ठीक नहीं है परन्तु वह समझता अपने को बहुत कुछ है। अब हम उसे सीधे रास्ते पर लायेंगे अथवा हम अमुक महान व्यक्ति से बात करके इसे ठीक करा देंगे।' अब देखने में तो ऐसा लगता है कि इनकी भावना सुधार करने की ही है परन्तु कोई-कोई व्यक्ति जो विधि अपनाते हैं उससे मालूम होता है कि उसके मूल में कुछ और भाव भी मिश्रित होता है। परिणाम यह होता है कि वे दूसरों को तो ठीक करना चाहते हैं परन्तु चलते-चलते स्वयं दूसरों की निन्दा के धन्धे में फँस जाते हैं। दूसरों का सुधार करने की कामना करते हुए ऐसे लोगों का अपना सुधार पीछे रह जाता है। इसका कारण यह है कि उनकी इस भावना के मूल में दूसरों के कल्याण की भावना नहीं होती बल्कि अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने अथवा दूसरे को तुच्छ सिद्ध करने की सूक्ष्म इच्छा होती है। अतः हमें यह देखना चाहिए कि

किसी के सुधार के लिए जब हम किन्हीं बड़ों को उसका समाचार देते हैं तो उस समय हमारे मन में उसके कल्याण की ही भावना होती है या उसकी ग्लानि करने का भी भाव भरा है। हमें गुण को धारण करना चाहिए और घुन को निकाल देना चाहिए।

सहयोग

ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं, 'बताइये, हम आपको क्या सहयोग दे सकते हैं? हमारा आपसे स्नेह है, इसलिए हमें यह विचार आता है कि हम भी आपका कुछ कार्य निपटा दें।' अब सहयोग की भावना तो बहुत ऊँची भावना है परन्तु किसी-किसी के मूल में नाम और यश की कामना होती है अथवा समाज के सामने दानवीर, कर्मवीर अथवा एक कार्य-कुशल व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करने की अथवा लोगों द्वारा अपने बारे में कुछ प्रशंसात्मक वाक्य सुन कर गुदगुदी अनुभव करने की इच्छा होती है। वह स्वयं भी अपने इस गुप्त भाव से अनभिज्ञ होता है और व्यक्त रूप में वह सहयोग का प्रस्ताव करता है। हमें चाहिए कि हम सभी के अच्छे कार्यों में सहयोगी बनने का यत्न तो करें परन्तु आशा-तृष्णा या 'मैं-मेरे' के भाव से ऊपर उठकर सहयोग दें।

समयान्तर में रूपान्तर

कई बार तो ऐसा भी होता है कि प्रारम्भ में मनुष्य में कोई दिव्य गुण शुद्ध रूप लिए हुए होता है परन्तु शनैः शनैः उसमें मलिनता आती जाती है। उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति दूसरे को सहयोग देने का जब प्रस्ताव पेश करता है तो उसके मन में निश्छल रूप से सहयोग की भावना होती है। उस समय वह सतोगुणी स्थिति में होता है और उसमें परस्पर स्नेह, भ्रातृत्व, सेवा-भाव इत्यादि का उद्रेक होता है परन्तु बाद में वह सोचता है, 'मैं भी तो काम करता हूँ; तब मेरा भी तो नाम होना चाहिए कि यह अच्छा काम मुझ द्वारा हुआ है।' इस प्रकार के विचार से उसके मन में सहयोग का स्थान ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिद्वन्द्व इत्यादि भाव ले लेते हैं। अतः हमें सदा इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हम शुद्ध रूप से ही दिव्य गुण धारण करें। जैसे हम घुन वाले

गेहूँ को निकाल कर अच्छे गेहूँ के आटे का भोजन सेवन करते हैं तो स्वस्थ रहते हैं, वैसे ही हमें चाहिए कि हम जिन दिव्य गुणों को धारण करें उन्हें भी घुन न लगे हों। दिव्य गुण हीरों के समान हैं परन्तु उनमें दाग नहीं होना चाहिए। यदि दिव्य गुणों रूपी सोने में अवगुणों का मुल्लमा मिला रहेगा तो हम आत्मा 'सच्चे सोने के समान' नहीं बन सकेंगे। तब भला हम सतयुगी, पूर्णतः पवित्र, शुद्ध गुणों वाली सृष्टि में जाने के अधिकारी कैसे बनेंगे?

त्याग, तपस्या और सेवाभाव

इस प्रकार विचार करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दिव्य गुणों की सही रूप से धारणा के लिए उनके मूल में चार भाव होने जरूरी हैं 1. त्याग, 2. तपस्या, 3. सेवा और 4. विश्वकल्याण की भावना। मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि 1. जिस दिव्य गुण की धारणा मैं स्वयं में मान रहा हूँ क्या उसके पीछे किसी न किसी प्रकार का त्याग समाया हुआ है? 2. क्या उससे मेरी तपश्चर्या में वृद्धि हो रही है या उससे मैं योगी की बजाय व्यवहारी और लौकिक बनता जा रहा हूँ? 3. क्या उसके पीछे सेवा-भाव समाया हुआ है या कोई महत्वाकांक्षा, बड़प्पन की इच्छा या कुछ सुविधा, साधन अथवा सामग्री प्राप्त करने का सूक्ष्म प्रलोभन है और 4. क्या मैं उसे विश्वकल्याण की योजना के अनुकूल दूसरों के भी कल्याण की भावना से कर रहा हूँ या उसमें कोई व्यक्तिगत लाभ सामने रख चल रहा हूँ। इन चारों बातों पर ध्यान देने से ही मनुष्य में दिव्यता का उत्कर्ष होता है। हमने प्रजापिता ब्रह्मा, मातेश्वरी सरस्वती तथा अन्य अनेक ब्रह्माकुमारी बहनों में दिव्य गुणों की जो धारणा देखी है उसका आधार दिव्यता ही है। उनका जीवन त्याग, तपस्या, सेवा और विश्वकल्याण की भावना पर टिका है। इसीलिए वे अनेकानेक मनुष्यात्माओं के लिए आदर्श हैं और प्रेरणा के स्रोत हैं। उनके व्यवहार में शुद्ध सरलता, नम्रता, सन्तुष्टता, गम्भीरता इत्यादि का समावेश है। हमें अपने जीवन को ऐसा ही बनाना चाहिए। ■■■



यज्ञ-रक्षक राजयोगिनी दीदी मनमोहिनी

■■■ ब्रह्माकुमार विद्यासागर, दिल्ली (रोहिणी, सेक्टर-22)

मैं 20 वर्ष की आयु में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का विद्यार्थी बना। मुझे सम्पूर्ण निश्चय हुआ कि शिव परमपिता परमात्मा, अपने परमधाम से अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्माजी के साकार माध्यम से वर्तमान कलियुगी दुनिया को सतयुगी पावन सुखमय दुनिया बनाने का कर्तव्य कर रहे हैं। इस कार्य में शक्ति सेना की सेनानी मातेश्वरी जगदम्बा के साथ-साथ दीदी मनमोहिनी जी की मुख्य भूमिका रही।

निर्भयता की देवी

दीदी मनमोहिनी, बापदादा एवं मातेश्वरी जी की परमविश्वसनीय, अति बुद्धिमान, गुणमूर्त्त, ज्ञानमूर्त्त, तपस्यामूर्त्त, अचल, अडोल, निश्चल और निर्भयता की देवी थीं। वे दूरदर्शी और हर विद्यार्थी को परख कर उस अनुसार सहयोगी बनाने में कुशल थीं। उन्हें आभास हो जाता था कि कौन-सी आत्मा यज्ञ के किस कार्य को, किस ढंग से सफल कर सकती है।

मम्मा-बाबा को रखा सदा निश्चित

वे पूर्ण रूप से देहीअभिमानि और एक आदर्श विद्यार्थी थीं। प्रतिदिन ज्ञान-मुरली सुनते हुए वे शिवबाबा की शिक्षाओं को डायरी में नोट करती थीं और पत्र-व्यवहार करते उन शिक्षाओं का संकेत देकर अवस्था को आगे बढ़ाती थीं। हर यज्ञ-वत्स अपने कर्तव्य पालन में उनको मार्गदर्शक समझता था। मुझे भी बापदादा एवं यज्ञ के सभी आदि रत्नों के समीप लाने वाली दीदी मनमोहिनी ही रहीं, जिन्होंने कदम-कदम पर भविष्य में होने वाली परीक्षाओं से मुझे अवगत कराया। साकार बाबा के होते उनका मुख्य पार्ट था दिल्ली क्षेत्र के भाई-बहनों को ज्ञान-योग में मजबूत बनाना। मम्मा, बाबा

मधुबन में रहते उनकी हर प्रकार की सेवा से सदा निश्चित थे। वे बहुत योगी आत्मा थीं।

हर आत्मा की सन्तुष्टि का रखा खयाल

दीदी मनमोहिनी को सदा यह खयाल रहता था कि मधुबन से हर कोई आत्मा संतुष्ट होकर वापिस जाये। एक बार दिल्ली, कालकाजी सेवाकेन्द्र की एक माता को दोपहर की वापसी की गाड़ी पकड़नी थी। उसी दिन प्रातःकाल उस माता ने दीदी मनमोहिनी को कहा, मैं यहाँ से असन्तुष्ट होकर जा रही हूँ क्योंकि मुझे अव्यक्त बापदादा से अच्छी तरह से मिलने नहीं दिया गया। दीदी मनमोहिनी जी ने गुलजार दादी को बाबा के कमरे में बिठाकर बाबा को यह सन्देश भेजा कि बाबा अपनी इस बच्ची को सन्तुष्ट करके भेजो। मैं चश्मदीद गवाह हूँ, उस माता के सामने अव्यक्त बापदादा पधारे और उसकी आशा पूर्ण हुई।

हर संकल्प होता रहा सिद्ध

दीदी जी का कोई भी संकल्प व्यर्थ नहीं गया। देहली में राजोरी गार्डन की जमीन दिल्ली सरकार ने ले ली थी और वापस नहीं मिल रही थी। दीदी जी के दृढ़ संकल्प ने वह जमीन वापस दिलाई। उसका नक्शा भी दीदी के होते पास हुआ और भवन का शिलान्यास कराने के पश्चात् वे अव्यक्त हुईं।

धन्य हैं ऐसी महान विभूति, जिन्होंने अपनी दृष्टि, वाणी, कर्म, आचार, व्यवहार द्वारा यज्ञ को सफलता के मार्ग पर बढ़ाया और बापदादा की वास्तविक राइट हैण्ड बनीं। दीदी जी को मेरी ओर से तथा सारे यज्ञ के भाई-बहनों की ओर से अनगिनत श्रद्धासुमन। ■■■



पत्र सम्पादक के नाम

अप्रैल अंक की खूबियाँ दिल में छप गई। संस्कार कैसे बदलते हैं, समझ में आ गया। 'आशावान बने रहो' पढ़ लेने के बाद शब्द 'वैरी फाइन, वैरी फाइन' उच्चारें कई बार। 'क्रोध का रूपान्तरण' लेख लेके आया क्रोध का इलाज। 'विशेष कौन' का विश्लेषण जाना। 'सम्बन्धों के संसार में बदलाव' में पढ़ी सम्बन्धों के बिगड़ने-जुड़ने की बातें। लेखिका ने चिन्तन की महीनता दिखाई।

शम्भु प्रसाद शर्मा, सोडाला, जयपुर

अप्रैल, 2019 अंक में 'रामकाज किए बिना मोही कहाँ विश्राम' लेख बहुत पसन्द आया।

प्रीति एम. खत्री, जयपुर

मार्च, 2019 का 'ज्ञानामृत' पीया और उसका रसास्वादन आपको बता रहा हूँ। 'सिद्धि पाने के लिए बुद्धि का सशक्तिकरण करो' लेख मार्मिक है। इसमें सबसे बड़ा बुद्धिबल सिद्ध किया गया है जो शाश्वत सत्य है। 'नया जन्म', 'प्रभु पालना के चमत्कार', 'सच्चे पिता ने दी जीवन जीने की वजह' आदि अनुभवों को भी पढ़ा। दुखधाम में जी रही मनुष्यात्माओं को जीवन की नई राह दिखाने वाले ये अनुभव बाबा की शक्ति मिलने के ही उदाहरण हैं।

मेरी युगल सेवानिवृत्त प्रिंसीपल है। जिस साल उनकी सेवानिवृत्ति थी, उसी साल पैरालाइसिस हुआ। मैं ज्ञान में चलता था। उनको कोर्स करा कर मधुबन ले गया। पैरालाइसिस होने पर भी वह बाबा की शक्ति से मधुबन हो आई और 'मुरली' तथा हर 'ज्ञानामृत' पढ़ना नियमित हो गया। ज्ञानामृत का पान करते-करते 9-10 वर्ष से जीवित है। धन्य हो 'मुरली', धन्य हो 'ज्ञानामृत'।

**ब्र.कु.रतन भाई, सिकन्दराराऊ,
हाथरस (उ.प्र.)**

मार्च अंक में शिवरात्रि का आध्यात्मिक संदेश पढ़ा। सम्पादकीय 'राजनीति - तब और अब' काफी ज्ञानवर्धक है। 'सिद्धि पाने के लिए बुद्धि का सशक्तिकरण करो' लेख में काफी मूल्यवान विचार पेश किए गये हैं। हर महीने ज्ञानामृत पत्रिका में काफी ज्ञान की बातें होती हैं। 'अहंकार पर विजय', 'सच्ची सुन्दरता' लेख भी अच्छे लगे। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को बार-बार पढ़ने को मन करता है।

**आचार्य डॉ.सुभाष पुरी 'राही', वरिष्ठ पत्रकार,
समाजसेवी, सम्पादक, धारीवाल (पंजाब)**

'ज्ञानामृत' का बेसब्री से इंतजार करता हूँ। इसमें प्रकाशित आध्यात्मिक लेख नई दृष्टि प्रदान करते हैं। बुद्धिजीवियों की ईश्वरीय सेवा करने में इन लेखों से बहुत मदद मिलती है। विशेष तौर पर संजय की कलम से एवं स्थायी स्तंभ, ज्ञान के उलझे सूतों को सुलझाने में बहुत मदद करते हैं। ज्ञानामृत के 55वें साल में प्रवेश होने पर इसकी सेवा में जुड़े सभी भाई-बहनों को दिल से दुआयें और बधाई। पचपन वर्षों में इसने जो जन-चेतना जगाई है उसका गुंजन चारों ओर बढ़ता ही रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

**ब्रह्माकुमार अशोक धेवडे, ससाणेनगर,
हडपसर, पुणे**

एक स्वच्छता यह भी

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन



एक बार हम एक यात्रा पर जा रहे थे। कार में कार-चालक, मैं और एक बहन थी। बहन ने कुछ खाया और पैकिंग का कागज कार की खिड़की से बाहर फेंक दिया। कार-चालक भाई ने तुरन्त कहा, बहनजी, आपको पता है ना स्वच्छ भारत अभियान चल रहा है। आपको पैकिंग का कागज बाहर नहीं फेंकना चाहिए था। मुझे दे देते, मैं जेब में रख देता और बाद में कूड़ेदान में डाल देता या आप अपने पास रख लेते। उसकी बात

सुनकर मैं प्रभावित हुई कि इस भाई को स्वच्छता का कितना ध्यान है। उस बहन ने भी कहा, भाई धन्यवाद, आपने ध्यान खिंचवाया, आगे से ध्यान रखूँगी।

बुराई फैलाने में नहीं, मिटाने में योगदान दें

अभी यात्रा आधा घन्टा भर और तय हुई होगी कि कार-चालक ने कहना शुरू कर दिया, बहन जी, क्या आप अमुक भाई को जानती हो, उसका खान-पान, रहन-सहन एकदम अस्वच्छ है। उसमें ज्ञान की धारणा

श्रद्धांजलि



साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई, दादी जानकी जी तथा सभी बड़ी दादियों की छत्रछाया में सदा आगे बढ़ने वाली, हम सबकी अति स्नेही सरला दीदी, पूरे गुजरात ज़ोन की मुख्य संचालिका थी। आपका अटूट निश्चय, मधुबन बेहद घर से और बाबा से दिल का प्यार बेमिसाल रहा। आप मुम्बई में लौकिक नानी जी के साथ सन् 1952 में ज्ञान में आई और सन् 1964 में अपनी दोनों लौकिक बहनों के साथ समर्पित हो गईं। निम्नू बहन जो उम्र में सबसे बड़ी थीं, मुम्बई नेपंसी रोड की संचालिका थी। उन्होंने कुछ समय पहले अपना पुराना शरीर छोड़ा था। आपसे छोटी भारती बहन, राजकोट सबजोन की संचालिका हैं। सरला दीदी ने पहले-पहले पूना में रहकर दादी जानकी जी के साथ बहुत अच्छी सेवायें दीं। उसके पश्चात् साकार बाबा ने आपकी विशेषताओं को देखते हुए गुजरात की सेवाओं की बागडोर सौंपी। आपने सरलचित और मिलनसार नेचर से सबको

सम्मान देते हुए पूरे गुजरात को एक सूत्र में पिरोकर बेहद की सेवायें कराईं।

आप मधुबन यज्ञ और सभी बड़ी दादियों की सदा राइट हैण्ड बनकर रही। आप मैनेजमेंट कमेटी की सक्रिय सदस्य थी। आपने अथक बनकर, सदा हाँ जी का पाठ पढ़ते हुए ईश्वरीय सेवायें दीं। आप सबके स्वास्थ्य का भी बहुत ध्यान रखती थीं। कुछ समय पूर्व आपका एक छोटा आपरेशन हुआ लेकिन आपरेशन के बाद तबियत बिगड़ती गई। दिनांक 6 जून, 2019 को दोपहर 12.30 बजे आपने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। आपके शरीर की आयु 79 वर्ष थी। मधुबन के चारों धामों की यात्रा कराते हुए, शान्तिवन में नदी के पास मुक्तिधाम में आपकी पार्थिव देह को अन्तिम विदाई दी गई।

ऐसी यज्ञ स्नेही, अथक सेवाधारी, बापदादा और दादियों के दिलतख्तनशीन आत्मा को

समस्त दैवी परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

भी नहीं है, उसका चरित्र भी संदेहात्मक है, वह चालबाज भी है....आदि-आदि। मैंने पूछा, क्या ये सब चीजें तुमने देखी हैं? उसने कहा, अमुक व्यक्ति मुझे बता रहा था। मैंने पूछा, क्या अमुक ने देखी हैं अपनी आँखों से? बोला, देखी ही होंगी, कह तो रहा था। तब मैंने कहा, भाई जी, अभी तो आप स्वच्छ भारत अभियान की पैरवी कर रहे थे। कागज से फैलने वाली अस्वच्छता पर हमारा ध्यान खिंचवा रहे थे परन्तु ये जो आप सुनी-सुनाई बात का प्रचार कर रहे हो, क्या इससे भारत अस्वच्छ नहीं हो रहा? जिस बात का पुख्ता प्रमाण आपके पास नहीं, आपने अपनी आँखों से देखी नहीं, उस अस्वच्छ बात को दूसरों को सुनाकर उनके चित्त को भी अस्वच्छ कर रहे हो, यह कितना बड़ा अपकार है। किसी की कमी-कमजोरी को बढ़ा-चढ़ाकर बताना, उसे फैलाना, यह बहुत बड़ा अपराध है। पहले हमने उसे अपने चित्त पर रखा, फिर दूसरों को सुनाया, यह गन्दगी का व्यापार ही तो है। होना तो यह चाहिए कि जैसे हम कूड़े को कूड़ेदान में डालकर ढक देते हैं ताकि उसकी बदबू न फैले, ऐसे ही बुराई को भी दबा दें, समा लें, ढककर रखें ताकि उसकी बदबू न फैले और अच्छाई को इत्र की तरह छिड़क दें ताकि उसकी खुशबू चारों ओर फैले। आप तो अप्रमाणित बुराई को फैलाने में लगे हो, बुराई यदि प्रमाणित भी हो, तो भी फैलाने योग्य नहीं होती। हाँ, यदि उस बुराई को मिटाने में हम योगदान दें तो हम शुभचिंतक की श्रेणी में आ सकते हैं, नहीं तो अपने, दूसरों के और इस देश की दुश्चिंतक ही तो हुए। मेरी बात से वह भाई दिल से सहमत हुआ और उसने स्वच्छ भारत अभियान में इस मानसिक स्वच्छता को भी जोड़ने की प्रतिज्ञा की।

भगवान शिव कहते हैं, 'जब कोई व्यर्थ समाचार सुनाता है तो कई आत्माएँ उसे रुचि से सुन लेती हैं। कर कुछ नहीं सकते और सुन लेते हैं तो वह समाचार बुद्धि में चला जाता है। फिर समय व्यर्थ जाता है इसलिए बाप की आज्ञा है, सुनते हुए भी मत सुनो। अगर कोई सुना भी दे तो आप फुलस्टॉप लगाओ। जिस व्यक्ति का सुना उसके प्रति दृष्टि वा संकल्प में भी घृणा भाव नहीं हो, तब कहेंगे

परमत से मुक्त।'

गिराएँगे तो वैसा ही फल पाएँगे

यदि हम किसी की बुराई सम्भालकर रखते हैं तो यह तो ऐसे ही हुआ कि किसी का फेंका हुआ कूड़ा सहेज रहे हैं। किसी व्यक्ति के फोड़े से मवाद निकला और हमने उसे बर्तन में रखकर अपने सिरहाने रख लिया। उसका फोड़ा तो ठीक हो गया पर हमें दिन-रात बदबू आती रहती है तो घाटे में कौन रहा? फायदे में कौन रहा? ये कमी-कमजोरियाँ भी तो आत्मा पर उभरे विकारों रूपी फोड़ों की मवाद ही तो हैं। कोई उन्हें किसी भी तरीके से बाहर निकाले और हम उन्हें सम्भाल कर रख लें तो हमारी मंजिल का क्या होगा? वो हमें कभी मिल भी पाएगी? आप किसी को ऊँचा नहीं उठा सकते, कोई बात नहीं, अपनी ऊर्जा को किसी को गिराने में तो न लगायें। यह संसार पाप के अंधकार से भरा पड़ा है। कहीं कोई पुण्य का दीया टिमटिमाने की कोशिश करता है। अपने पुराने संस्कारों के कारण उस टिमटिमाते दिए पर फूकों का प्रहार तो न करें। यदि हमारे पास समय और शक्ति है तो, पाप में डूबे किसी दीए को पुण्य का प्रकाश दें। संसार का नियम है, जो देंगे वही लौटेगा। गिराएँगे तो गिरने का ही फल पाएँगे।

चीज की तरह बात को भी पहले चख लो

यदि कोई व्यक्ति हमें कहता है, मैंने यह खाने की चीज आपके लिए बनाई है या कहीं से लाई है, तो हम पूछते हैं, स्वादिष्ट है क्या, मीठी है क्या, कड़वी तो नहीं है, मुँह बेस्वाद तो नहीं हो जाएगा? तब यदि वह व्यक्ति जोर देकर कहता है, नहीं, नहीं, बहुत स्वाद है, खा लो, कुछ नहीं होगा, तो भी हम उसको कहते हैं, देखो भाई, मुख सबके अलग-अलग प्रकार के हैं, पहले मैं थोड़ी-सी चख कर देखूँगा, यदि अच्छी लगी तो ही खाऊँगा, नहीं तो छोड़ दूँगा।

इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति हमें कहता है, एक नई बात है मेरे पास आपको सुनाने के लिए, सुनाऊँ क्या? तो खाद्य पदार्थ की तरह उसकी बात के लिए भी हम पूछ

सकते हैं, बात बढ़िया है क्या, उसे सुनकर मेरा मन कड़वा या भारी या चिन्तातुर या नकारात्मक तो नहीं हो जाएगा। यदि वो कहता है, नहीं, नहीं, बात बहुत मजेदार है तो (खाद्य पदार्थ की तरह) हम कह सकते हैं कि रुचियाँ सबकी भिन्न-भिन्न होती हैं, आवश्यक नहीं कि जो बात आपको रुचे, वह मुझे भी रुचे, पहले आप मुझे थोड़ा हिन्ट दो, किसके बारे में है, कैसी है, फिर यदि अच्छी लगी तो पूरी सुन लूँगा।

बात रूपी भोजन सोच-समझकर अन्दर डालें

जैसे अस्वास्थ्यकर पदार्थ खाने से हाजमा बिगड़ जाता है, इसी प्रकार असत्य, अशिष्ट, अनर्गल बातें सुनने से आत्मा का हाजमा बिगड़ जाता है। खाद्य न पचे तो उल्टी हो जाती है, बात न पचे तो भी यहाँ-वहाँ उल्टी होती रहती है। बार-बार उल्टी करने से जैसे शरीर कमजोर हो जाता है, ऐसे ही आत्मा भी कमजोर हो जाती है इसलिए बातों रूपी भोजन को बहुत सोच-समझकर अन्दर डालें। निरर्थक बातों से आत्मा को बोझिल न करें क्योंकि बोझ वाला कभी उड़ नहीं सकेगा।

बातों को नहीं, खुद को शृंगारो

कुछ लोगों को साज-शृंगार का बहुत शोक होता है। वे बात रूपी गुड़िया को पकड़ कर उसे खूब सजाते हैं। कभी अनुमान की चुनरी ओढ़ाते, कभी असत्य की मिलावट रूपी बड़ा घाघरा पहनाते, कभी बदले की भावना का जूड़ा लगाते, कभी नीचे गिराने रूपी पाजेब पहनाते, कभी नफरत सना पाउडर लगाते, इस प्रकार सजा-सजा कर उसका रूप बड़ा और आकर्षक बनाने की कोशिश करते। इतने भारी साज-शृंगार वाली बात को मन में रखे-रखे जब बोझिल होने लगते तो बोझ को हल्का करने का साधन ढूँढ़ते। फिर यदि ज्ञान के सागर में बहाते हैं तो भी पिता परमात्मा कहते हैं, बच्चे, शृंगार करने में इतना समय व्यर्थ करने की क्या जरूरत थी, पहले दिन ही ना बहा कर हल्के हो जाते? और यदि किसी मानव को सुनाकर उसके मन को बोझिल करने की कोशिश करते हैं तो कर्मों का ऐसा खाता उलझा लेते

हैं कि जितना बोझ दिया उससे कई गुणा बोझ वापस झेलते हैं क्योंकि जो दंगे वही लौटेगा इसलिए बातों को शृंगारने की आदत छोड़, खुद को सदगुणों से शृंगारने में समय लगाओ।

बातों को पकड़ो मत, काल-चक्र में लिपट जाने दो

बातों को, घटनाओं को, समस्याओं को पकड़ो मत, उन्हें समय के साथ बह जाने दो। काल-चक्र में लिपट जाने दो। काल की धारा उन्हें दूर बहा ले जाएगी और आपके चित्त को हलका और स्वच्छ कर देगी। उस बात में, घटना में, परिस्थिति में कुछ सीखने योग्य है, कुछ प्रेरक है, कुछ काम का है, उतना ही पकड़ कर रख लो, बाकी जाने दो, बहने दो। जैसे एक स्वच्छ जलधारा की नदी निरन्तर बह रही है। कोई उसके किनारे कपड़े धोता है और कपड़ों का मैल नदी में गिरता है। बहती नदी मैल को बहा ले जाती है और स्वच्छ बनी रहती है। यदि नदी उस मैल को बहाव के सुपुर्द न करे और पकड़ कर रख ले तो क्या होगा? यहाँ ठहरा गन्दा, बदबूदार जल स्वच्छ नदी की छवि बिगाड़ेगा, उस गन्दे जल का विस्तार होकर बाकी स्वच्छ जल को भी वह अपनी चपेट में लेने लगेगा। यदि कोई दूसरा भी, दूसरी तरफ कपड़ों का गन्द नदी में घोल जाए तो नदी उस गन्द को भी अपनी पुरानी आदत के कारण पकड़ लेगी और इस प्रकार धीरे-धीरे उसकी स्वच्छता को ग्रहण लगता जाएगा। एक दिन वह पूरी की पूरी गन्दा नाला बन जाएगी।

सुनी-सुनाई बातों को पकड़ना, याद करना, जिसके सम्बन्ध में वो बातें थीं, उसे घृणा की दृष्टि से देखते हुए ताने देकर सुनाना, यह अपने चित्त रूपी उजली नदी को गन्दा नाला बना लेने के समान ही है। फिर इस गन्दे नाले रूपी चित्त के पास कोई आना पसन्द नहीं करता अर्थात् हम अपने शुभचिन्तकों को दूर करते जाते हैं और अकेले जीने पर या बहुत कम संगठन में जीने को मजबूर हो जाते हैं। ■■■

भोली को मिला भोलानाथ



■■■ बहन पूजा टंडन, केन्द्रीय जेल, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

मिली नई रोशनी

मेरा जन्म एक मध्यमवर्गीय धार्मिक परिवार में हुआ। घर के धार्मिक वातावरण का प्रभाव मुझ पर भी पड़ा। जब मैं छोटी थी तो भगवान शिव जी की पूजा करती थी। हर सोमवार को व्रत रखती थी, महाशिवरात्रि में जागरण करती थी, 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप करती थी, बेलपत्र चढ़ाती थी, शिव मंदिर में जाकर अकेले में बैठ ध्यान करती थी, लोगों के साथ बैठ भजन-कीर्तन करती थी। मेरी दिनचर्या की शुरुआत ही पूजा-पाठ से होती थी। ये सब देखकर मेरे घर वाले मुझे भोलेनाथ की भोली कहते थे। समय का घोड़ा ऐसा सरपट दौड़ा कि कब बड़ी हुई, कब शादी हुई और कब बाल-बच्चे भी हो गये, पता ही नहीं चला। फिर भी जीवन खुशी से बीत रहा था।

जीवन हुआ अंधकारमय

बात सन् 2008 की है। मैं एक इन्वेस्टमेंट कंपनी में कर्मचारी के रूप में कार्यरत थी। बाद में मुझे इस कंपनी का शेयर होल्डर बनाया गया और निदेशक भी बना दिया गया। दस्तावेज में मेरे हस्ताक्षर होने के कारण लोगों के बीच मेरी जान-पहचान बढ़ गई। इस कंपनी में लोगों की जमा पूंजी के बदले अच्छा-खासा ब्याज दिया जाता था। सन् 2014 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने कंपनी के लेन-देन पर रोक लगा दी। लेन-देन बन्द होने से लोगों को पैसा वापस नहीं मिल पा रहा था इस कारण हमारे खिलाफ केस दर्ज हो गया। हम सातों निदेशकों को सितम्बर, 2015 में जेल हो गई। अचानक हुए इस घटनाक्रम से मुझे बहुत दुःख हुआ। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मुझे कभी जेल में भी जाना पड़ जायेगा।

जेल में मैं बहुत उदास और चिंतित रहती थी। कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। बच्चों के भविष्य के बारे में, परिवार के बारे में सोच-सोच कर बहुत दुःखी रहती थी। मैं मन को पूजा-पाठ करने में, धार्मिक पुस्तकें पढ़ने में व्यस्त रखने की कोशिश करती थी लेकिन निराशा दूर होने का नाम नहीं लेती थी। जैसे-तैसे साल भर बीत गया। सन् 2016 में एक दिन श्वेतवस्त्रधारी बहनों का आगमन जेल में हुआ और उन्होंने सत्संग कराया। आत्मा-परमात्मा के बारे में बहुत ही अनोखा ज्ञान सुनाया जो कहीं नहीं सुना था। बहुत सुकून मिला, आन्तरिक खुशी की अनुभूति हुई। बहनों की वाणी में मधुरता और दिव्य आकर्षण था इसलिए मैं रोज ज्ञान सुनने लगी। हमें शिवबाबा से योग लगाना सिखाया गया जिसे राजयोग कहते हैं। राजयोग के अभ्यास से मुझे खुशी होने लगी और सच्चे सहारे का अनुभव भी होने लगा। मेरा दुःख, चिन्ता, निराशा जैसे मिट गए। जेल में नई रोशनी मिल गई। मैं अपने को बहुत भाग्यशाली समझने लगी। बाबा ने मुझे तकदीर बनाने का अच्छा मौका दे दिया।

निश्चय हुआ पक्का

जब मुझे ज्ञान मिला तो यकीन नहीं होता था कि मुझे सचमुच भगवान मिल गये हैं। ऋषि-मुनि जिनको पाने के लिए कठिन तपस्या करते हैं, पूरा जीवन बिता देते हैं, उन्हें भी वो प्राप्त नहीं होते, फिर मुझे कैसे मिल सकते हैं? इस प्रकार के विचार मन में आते थे। एक दिन अमृतवेले उठी और बाबा से मन-ही-मन बातें करने लगी कि यदि आप सचमुच इस दुनिया में आ चुके हैं तो मुझे अपनी उपस्थिति का अहसास कराओ। मैं आँखें बंद करके मन ही मन

बाबा से बातें कर रही थी कि अचानक मेरे कंधे पर किसी के स्पर्श का अहसास हुआ। मैं घबरा गई और आँखें खोल कर चारों तरफ देखने लगी। मेरे आसपास सभी बंदी महिलायें गहरी नींद में सो रही थीं। वहां कोई भी दिखाई नहीं दिया। पहली बार मुझे ऐसा लगा कि बाबा मेरी बातें सुनते हैं, वो मेरे आसपास ही हैं। फिर तो मेरे नयनों से प्रेम के आँसू बहने लगे। मुझे ब्रह्माबाबा और शिवबाबा के अनेकों अनुभव होने लगे।

बचपन के प्रश्नों का मिला उत्तर

बचपन में जब खुले आसमान को देखती तो ढेरों टिमटिमाते सितारों को देख कर अपनापन अनुभव होता था। ऐसा लगता था जैसे इनसे कोई रिश्ता है, ये सितारे जैसे बोल पड़ेंगे। घर के बड़े-बुजुर्ग कहते थे, ये हमारे पूर्वज हैं। जब बाबा के ज्ञान को सुना तब पता चला, हम आत्मायें एक सितारे मुआफिक हैं और परमधाम में बाबा के साथ हम सब चमक रहे हैं। शायद इसीलिए अपनेपन के रिश्ते की अनुभूतियाँ होती थीं।

कर्मों की गुह्यगति का ज्ञान

जब भी कुछ हमारे जीवन में अच्छा होता है तो उसका श्रेय हम खुद लेते हैं लेकिन कुछ भी बुरा होता है तो हम दूसरों को दोष दे देते हैं या फिर भगवान को दोषी बना देते हैं कि वे ही दुःख दे रहे हैं। शिवबाबा के ज्ञान में आने के बाद मुझे पता चला कि जो कुछ मेरे साथ हो रहा है, अच्छा या बुरा, मेरे कर्मों का ही परिणाम है। सृष्टिका जो खेल चल रहा है, वो कर्मों के आधार पर ही चल रहा है। पहले मैं अपनी सजा के लिए दूसरों को दोषी समझती थी लेकिन अब मुझे यह अहसास हो चुका है कि चाहे पिछले जन्मों के कर्मों का फल हो या इस जन्म के कर्मों का, सजा मेरे कर्मों का फल ही है। जो भी जाने-अनजाने में मेरे से भूल हुई है उसके लिए मैं प्राण प्यारे शिवबाबा से सुबह-शाम क्षमा माँगती हूँ। पहले मुझे जेल में एक क्षण भी गुजारना मुश्किल था लेकिन अब बाबा की याद से मेरी सारी चिन्तायें मिट गयीं और समय सहज ही गुजर

रहा है।

जेल के अंदर मिला सच्चा सहारा

मेरे जेल में आ जाने के बाद बच्चों को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा और उनके सामने आर्थिक कठिनाइयाँ भी खड़ी हो गईं। बच्चे किराये के मकान में रह रहे थे। मकान मालिक को किराया नहीं दे पाये तो उसने मकान खाली करवा लिया और गाड़ी भी छीन ली। जब बच्चों ने मुझे ये सब बातें जेल में आकर बतायीं तो मुझे बहुत दुःख हुआ। मुझे यह सोचकर रोना आ गया कि मेरे कारण, मेरे बच्चे बेघर हो गये। मैंने बाबा को अपनी सारी बातें बतायीं और बाबा को दिल से याद करने लगी। करीब 6 महीने बाद मकान मालिक ने बच्चों को अचानक फोन करके बोला कि अपनी गाड़ी ले जाओ, मुझे तुम लोगों से कुछ नहीं चाहिए। जब मुझे बच्चों ने बताया तो बाबा के प्यार में आँखें भर आयीं। मेरे बच्चों का अब बाबा ही सहारा है। हर पल बाबा के लिए दिल से शुक्रिया निकलता है।

अब तो जेल में बंदी महिलाओं को मुरली सुनाती हूँ। नये-नये लोगों को भी बाबा का परिचय देती हूँ, औरों को भी प्रेरणा देती हूँ कि परमात्मा आया हुआ है, अपना कल्याण कर लो। यहाँ पर प्यारे बाबा अनेकों के सहारे बन गये हैं। मेरा बस एक ही सपना है कि यहाँ से निकलकर बाबा से सम्मुख मिलन मनाऊँ। बाबा की कर्म भूमि, चरित्र भूमि, महान आबू तीर्थ (मधुबन) का दर्शन करूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि बाबा जरूर कोई रास्ता निकालेंगे और मैं बरी हो जाऊँगी। मेरे दिल की भावनाएँ कविता के रूप में लिख रही हूँ -

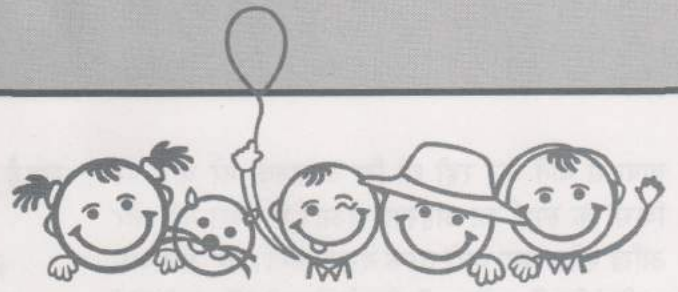
मन के द्वार खोल ले, मिल जायेंगे भगवान।

कर्म श्रेष्ठ कर ले, जीवन हो जायेगा महान।

मन-बुद्धि को वश कर ले, साँसों में रम जायेगा भगवान।

चल उस ओर जहाँ बसता पावन जहान।।

अद्वैत का आनंद



■■■ ब्रह्माकुमारी गीता बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, शान्तिवन

कहा जाता है, उत्सवप्रिया: जना:। मनुष्यात्मा मूलतः सत्य है, चैतन्य है और आनंद-स्वरूप है। जीवन में आनंद है तो जीवन सरस अनुभव होता है। स्व से लेकर सर्व में मानव को आनंद चाहिये। आध्यात्मिक जीवन में भी आनंद की अनुभूति बनी रहती है तब हम जीवनभर आध्यात्मिक बने रह सकते हैं।

सच्चा आनंद है अन्तर की अनुभूति में

विचारणीय बात है कि अधिकतर संन्यासी, महात्माओं के नाम में 'आनंद' शब्द सम्मिलित होता है, जैसे कि स्वयं के स्वरूप में आनंद अनुभव करने वाले निजानंद, आत्मानंद, स्वरूपानंद गाये जाते हैं। धर्म, अध्यात्म में आनंद अनुभव करने वाले धर्मानंद, अध्यात्मानंद, परमानंद, तदरूपानंद कहे जाते हैं। सत्य, पवित्रता, ज्ञान में आनंद की अनुभूति करने वाले सच्चिदानंद, सत्यमित्रानंद, विशुद्धानंद, निश्चलानंद, मुक्तानंद आदि नामों से पुकारे जाते हैं। संन्यस्त जीवन वैराग्य, त्याग, तप तथा उपरामवृत्ति का प्रतीक है। अधिकतर लोग इस प्रकार के जीवन को नीरस, शुष्क तथा असहज समझते हैं परन्तु नाम उन्हीं के 'आनंद' शब्द से युक्त हैं। इससे स्पष्ट है कि सच्चा विवेकपूर्ण आनंद अंतर की अनुभूति में है, स्वयं के सत्य स्वरूप में है, न कि बाह्य व्यक्ति, वस्तु, स्थान या क्रिया में है।

कार्यपरायण होने पर आती है कार्यकुशलता

हम सब अपने अनुभवों को भी देखें, जब भी किसी कार्य में हम एकाकार हो जाते हैं तो उसमें आनंद अनुभव होता है। आधे-अधूरे मन से कार्य करते हैं तो आनंद नहीं आता है। हमें उस कार्य से तद्रूप होना होता है। जब तक हमें अपने आपमें, अपने प्रत्येक कार्य में आनंद

नहीं आता है तब तक हम उस कार्य को लम्बे काल तक या आजीवन नहीं कर पाते हैं। कार्य जब अनमने से यानि कि भारी होकर करते हैं तो उस कार्य में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ रह जाती हैं और अन्ततः परिणाम वांछित सफलता का नहीं आता है। कार्य में परायण होते हैं तब कार्यकुशलता भी आती है और हमारा कर्म प्रशंसनीय, महिमा योग्य और उदाहरणरूप बन जाता है। यथार्थ विधि और रीति से कार्य करने पर ही खुशी होती है और बार-बार करने का उमंग आता है।

परमात्मा में अनन्य भाव से मिलता है अतीन्द्रिय सुख

भक्त भी भक्ति करते समय जब तक मन से भटकते रहते हैं, उन्हें मजा नहीं आता है। भले ही वे बाह्य रूप से क्रियाकांड करते रहते हैं परन्तु आत्मतुष्टि नहीं पाते हैं। जब परमात्मा से लगन लग जाती है, परम याद-प्यार में अनन्यभाव आ जाता है तब ही हमें अतीन्द्रिय आनंद और ईश्वरीय सुख का अनुभव होता है, फिर दुनियावी सुख फीके लगने लगते हैं। इसीलिये भक्ति में भी अव्यभिचारी भक्ति, नौधा भक्ति गाई हुई है। भक्त अपने अस्तित्व को पूर्णतया परमात्मा प्रति समर्पित कर देता है तब उसे साक्षात्कार होते हैं। तब उनके आराध्य, उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। प्रभुस्मृति के समय दैहिक, इहलौकिक सुधबुध से परे होकर परम रस में हम जब तक रम नहीं जाते, तब तक उच्च स्तरीय साधना की स्थिति नहीं बनती है। साधना की उत्कृष्टता में ही मौलाई मस्ती का, इलाही सुख का अनुभव होता है।

ऐक्यभाव से आनंद

भारत का इतिहास अनुभवसिद्ध भक्तों, संतों,

योगियों के दिव्य चरित्रों से भरा हुआ है जैसे कि कबीर, सूरदास, रैदास, रहीम, तुलसीदास, मीराबाई, नरसिंह महैता, तुकाराम, ज्ञानदेव, अक्क महादेवी, तिरुवल्लुवर आदि-आदि अपने इष्ट से एकरूप हो गये। जब ऐक्यभाव बना तब आनंद में नाच उठे। भावातिरेक अवस्था में ही अनहद आनंद को प्राप्त हुए। उन्हें परिवार और समाज की तरफ से मिले हुए सितम भी प्रसाद अनुभव हुए। विरोध और अत्याचार की परिस्थितियों में भी वे हारे नहीं, और ही अपने लक्ष्य के प्रति तीव्रगति से अग्रसर हुए। आंतरिक विचारों का, भावों का, भावनाओं का तादात्म्य जब परमात्मा से सध जाता है तब स्वतः हमारे में सहनशीलता, निर्भयता, धीरज, स्थिरता आदि की धारणा हो जाती है। भक्ति के आदिकाल में हुए ऐसे ऋषि-मुनियों ने जब परमात्मा से अद्वैत रचाया तब ही उनमें सृजनशीलता के, रचनात्मकता के नवीन विचार उत्पन्न हुए और नये-नये विचार दुनिया के आगे प्रस्तुत किये। एक वैज्ञानिक भी अपने संशोधन कार्य में खो जाता है तब सत्य प्राप्त करता है और खुशी में फूला नहीं समाता है। उसे दुनियावी मान-शान, मौज-मजा का आकर्षण नहीं रहता है। हम कह सकते हैं कि ऐसे संशोधन कार्य में लगे हुए वैज्ञानिक भी एक प्रकार से तपस्वी हैं, साधक ही हैं, जो प्रकृति के पाँच तत्वों प्रति एकाग्र होते हैं, सत्यान्वेषण करते हैं और प्रकृति जगत के राज्यों को उजागर करते हैं। आज मानव समाज को सुख-सुविधा के अनेकानेक साधन जो उपलब्ध हुए हैं, वे हमारे वैज्ञानिकों की साधना का ही फल हैं। अगर वे अपने संशोधन कार्य में, प्रयोगशाला में, प्रयोग करने में अपना संसार नहीं समझते और उसमें रच-बस नहीं जाते तो जीवन इतना सुविधाजनक नहीं बनता।

विविधता में भी है आनन्द

हमारे आपसी सम्बन्धों में, परिवार-समाज में, संस्था-संगठनों में एकता होती है तभी हम मिलजुल कर विचार कर पाते हैं। संसार तो विविधता से भरा हुआ है।

लताएँ भी हैं। हरेक की अपनी सुंदरता है। इस विविधता में तालमेल बना रहता है तभी इस खेल में सुख-आनंद अनुभव होता है। जब इनकी पारस्परिक संवादिता बिगड़ती है तब इस भौतिक जगत के जीवन में दुख-तकलीफ शुरू होते हैं। भले ही हम जीवात्मायें भिन्न-भिन्न स्वभाव-संस्कार वाले हैं परन्तु इस वैविध्य में ही आनंद है। हम सभी एक ही प्रकार के नमूने होते, कार्बन कॉपी होते तो सोचो, क्या अच्छा लगता? कितना नीरस और उलझाने वाला खेल हो जाता? लेकिन विविध नाम, रूप, गुण, कर्म वाले होने पर भी, जब हमारे आंतरिक आत्म-स्वरूप के मूलभूत – शान्ति, आनंद, प्रेम, ज्ञान, शक्ति आदि गुणों के आधार पर सामंजस्य बनता है जब हमें एक-दो से सहयोग, साथ, शक्ति मिलती है और फिर हम मुश्किल कार्य भी सहज संपन्न कर लेते हैं। एक अकेला तो सब कुछ नहीं कर सकता है। जहाँ भी मानव और प्रकृति के बीच या मानव और मानव के बीच भावों में, विचारों में, उद्देश्यों में, कार्य-पद्धति में ऐक्य और न्यायोचित समानता रहती है वहाँ कार्य की संपन्नता और सफलता का आनंद अनुभव होता है।

संस्कार मिलन का सुख

हमारे पारिवारिक जीवन में संस्कारों की रास मिलती है तभी तो सुख का अहसास होता है। शारीरिक रूप से सभी साथ रहते हैं परन्तु जब मनोमिलन नहीं होता तब संबंध बन्धन लगते हैं, घर समरांगण बन जाता है और परिवार-समाज जंजीर महसूस होते हैं। ये सब आनंददायी, उत्साहवर्धक, शक्तिदायक तभी ही लगते हैं जब आपसी मेलमिलाप होता है। जब किसी भी कार्य से सम्बन्धित हमारी आपसी अद्वैत मत होती है, मनमेल होता है तभी हर हाल में आनंद अनुभव होता है। हमारे जीवन का बाह्य-भौतिक हाल साधारण हो तभी भी अंतर के ऐक्य के आधार पर ही हम आनंदविभोर रहते हैं।

दिखावट, बनावट बना देती है असहज

हमारे अपने आंतरिक व्यक्तित्व में भी जब तक

रहती है। हम सोचते कुछ हैं, बोलते कुछ और हैं और करते कुछ तीसरा है तो हम खुद ही खुद से संतुष्ट और प्रसन्न नहीं रहते हैं। तो हमारी कथनी-करनी में, हमारे विचार-वाणी-व्यवहार में समानता, अंदर-बाहर एकरूपता जरूरी है। जहाँ दोहरापन है वहाँ फिर दिखावट, बनावट स्थान लेने लगती है और ये हमारे आंतरिक असली शुद्ध, सत्य आत्मस्वरूप के विपरीत है। इसलिये फिर हम सहज नहीं रह पाते हैं।

सत्य के साथ एकमत हो जाएँ

हम आत्मायें चूँकि अपने मूल स्वरूप से सत्य हैं, शुद्ध हैं, अविनाशी हैं इसलिये जब तक सत्य के आधार पर, शुद्ध विधि से सदाकाल के लिये प्राप्ति नहीं होती तब तक हम सदाकाल के सुख-आनंद का अनुभव नहीं कर पाते हैं। सत्य ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर ही हम अपनी अद्वैत स्थिति रच सकते हैं। भले ही हमारी व्यक्तिगत मत, राय, मान्यता भिन्न होती है परन्तु सत्य के साथ हमें एकमत हो जाना चाहिए और निर्विकल्प होकर स्वीकार कर लेना चाहिए। वहाँ अपना अहम् बीच में न लाकर सत्य पर मतैक्य बना देना चाहिए। दो सुंदर-सही विचारों में से बहुमत से कोई एक मत को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। बेशक अंधश्रद्धा और अज्ञान न हो परन्तु व्यर्थ का तर्क-वितर्क या वादविवाद भी समय, शक्ति को बरबाद करते हैं। अद्वैत स्थिति बनने से दृढ़ता और शक्ति से कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

आओ, हम सब एकमत, एकव्रता बन अद्वैत भाव और स्थिति का आनंद लेते हुए एकरस बनें। ■■■

लुप्त हुई आभायें हैं

■■■ वी.के. मदन मोहन, ओ.आर.सी. गुरुग्राम

हे मानव! दिव्य कहाँ तेरी, वो लुप्त हुई आभायें हैं।
पीड़ाओं के स्वर प्रबल, आज मुखर हो आये हैं।।
पशु से भी बदतर है जीवन, हिंसा से भरा हुआ तन-मन।
बदली धर्म की परिभाषा, ये कैसा है परिवर्तन।।
डगमगाते कदम तेरे, ये आज कहाँ ले आये हैं।
हे मानव! दिव्य कहाँ तेरी, वो लुप्त हुई आभायें हैं।।

ज़रा सोच तेरा जीवन, क्या यूँ ही चलता आया है।
वो गौरवशाली इतिहास तेरा, भूल न अब तक पाया है।।
गाते रहते गुणगान सदा, उन आदर्शों के साये हैं।
हे मानव! दिव्य कहाँ तेरी, वो लुप्त हुई आभायें हैं।।

याद करो जब प्रथम बार, तुम इस धरती पर आये थे।
देवी-देवताओं के तुम, दिव्य रूप बन छाये थे।।
वो कीर्ति तुम्हारी है जिसका, यशगान सदा करते आये।
हे मानव! दिव्य कहाँ तेरी, वो लुप्त हुई आभायें हैं।।

तू ही देव जिसका पूजन, तू खुद ही करता आया है।
तू ही दानव बन करके, दुःख आज स्वयं में लाया है।।
समझो, खुद को खुद ही मिल, क्यों इतने भरमाये हैं।
हे मानव! दिव्य कहाँ तेरी, वो लुप्त हुई आभायें हैं।

बाबा ने दुखों से लड़ना सिखाया

■■■ ब्रह्माकुमारी सविता बहन, भुसावल (महाराष्ट्र)



मेरी उम्र 42 साल है। भक्ति मार्ग में तो मैं बचपन से थी परन्तु जिंदगी इतनी कठिनाइयों से भरी थी, दुखों के इतने उतार-चढ़ाव आए जिनसे उबरने के लिए शिवबाबा के सिवाय अन्य कोई सहारा हो नहीं सकता था। आज जो जिंदगी मैं और मेरी बेटी जी रहे हैं वह बाबा की दी हुई है। अगर बाबा का साथ ना होता तो मैं अपनी और अपनी बेटी की जिंदगी को कब की समाप्त कर चुकी होती।

सन् 2001, 9 फरवरी मेरी जिंदगी का अविस्मरणीय दिन है। मैं अपने पति, सास-ससुर और दोनों बच्चों समेत भुसावल से बांशी शादी के लिए जा रही थी। सफर में अचानक दुर्घटना घटी और मेरे सास-ससुर जी ने शरीर छोड़ दिया। इस दुर्घटना में मुझे, मेरे पति और बच्चों को भी काफी शारीरिक हानि पहुँची थी जिसके चलते पति भी ज्यादा दिन तक जी नहीं पाए। इस हादसे ने मुझे पूरी तरह हिला दिया लेकिन बच्चों के प्रति मेरी जिम्मेदारी को समझते हुए मैंने खुद को हौसला दिया और बच्चों को ही अपनी दुनिया बना कर, उनकी जिंदगी सँवारने में जुट गई। मेरे बेटे और बेटी की हंसी मुझे दुनिया के सारे सुखों का अनुभव कराती थी लेकिन दुखों का लेखा-जोखा अभी भी बाकी था।

एक दिन अचानक मेरे सात वर्षीय पुत्र का निधन हो गया। यह सदमा मैं सहन नहीं कर पाई और अपने होशो-हवास खो बैठी। मेरी जीने की तमन्ना पूरी तरह से समाप्त हो गई। अगर मैं मर जाती तो मेरी बेटी को संभालने वाला कोई नहीं था इसी कारण मैंने कठिनतम फैसला लिया, वो था अपनी बेटी की और अपनी जिंदगी को खत्म करने का। मैंने ढेर सारी नींद की गोलियाँ दूध के गिलास में मिला दीं और जैसे ही बेटी को वह दूध पिलाने की कोशिश की, अचानक से किसी शक्ति ने मेरे हाथ को

झटक कर ग्लास नीचे गिरा दिया। ऐसे लगा जैसे कोई उसे बचाने की कोशिश कर रहा है। इस घटना ने मुझे विचार करने पर मजबूर कर दिया। जब मैं गिरा दूध साफ कर रही थी तभी मेरी नजदीकी सहेली घर आई। मैंने उसे यह सारी घटना बताई। वह मुस्कराई। उसने कहा, सारे सवालों के जवाब मिलेंगे, बस, सुबह तैयार होकर बैठना, हमें कहीं जाना है। सुबह मन में उत्सुकता लिए मैं उसके साथ चल पड़ी। वह मुझे पास के ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर ले गई और सात दिन का कोर्स कराया। जैसे-जैसे कोर्स हो रहा था, दुखों और सुखों का फेरा समझ में आ रहा था, शरीर और आत्मा का भेद समझ में आ रहा था तथा शिव और शंकर का अंतर भी समझ में आ रहा था।

इसके बाद भगवान शिव बाबा के साथ होने का एहसास मुझे हमेशा रहने लगा। एक सुबह गरम पानी मेरे शरीर पर गिर गया। सारे शरीर में जलन होने लगी। फिर भी मैं तैयार होकर सेवाकेन्द्र गई और बाबा के कमरे में जा बैठी। योग लगाते समय महसूस हुआ कि मेरे सारे शरीर पर जैसे किसी ने मरहम लगा दिया हो। यह चमत्कार बाबा के सिवाय और कौन कर सकता है।

आज मैं अपनी जिंदगी बहुत अच्छे से जी रही हूँ। एक बड़ी शॉप में काम करती हूँ। साथ में काम करने वालों को ईश्वरीय सन्देश सुनाती हूँ ताकि उनका भी जीवन सफल तथा सुयोग्य बने और मेरा भी पुरुषार्थ आगे बढ़ता चले। मैं बाबा का लाख-लाख शुक्रिया अदा करती हूँ कि उन्होंने मेरा जीवन परिवर्तित कर दिया और जीवन में शान्ति, सुख, आनंद, प्रेम, ज्ञान का संचार कर दिया। आज मैं अपने आपको संसार की सबसे सुखी, प्रसन्न, भाग्यशाली और आनंदित आत्मा समझती हूँ।

सुख-शान्ति का आधार सहज राजयोग

■■■ ब्रह्माकुमार नरेश, मुजप्फरनगर



आज मनुष्य परमात्मा से योगयुक्त होना चाहते हैं परन्तु अपनी व परमात्मा की आत्मिक पहचान न होने के कारण अपनी-अपनी सोच के अनुसार उन्होंने परमात्मा के स्वरूप गढ़ लिये हैं जिनसे योग में प्राप्ति होती नहीं। यदि स्वरूप भ्रामक है तो दो बातें होंगी 1. न तो परमात्मा से प्रेम और प्राप्ति का अनुभव होगा और ना ही उसकी अन्य रचनाओं से भातृत्व-भावना अनुभव होगी। 2. आन्तरिक सुख-शान्ति के दाता (परमात्मा) से विछोह के कारण मन स्थूल साधनों के होते हुए भी जीवन में निरसता, व्याकुलता व शून्यता का अनुभव करते हुए 'कुछ' पाने को भटकेगा। विभिन्न सांसारिक 'योग' इस 'कुछ' को पाने के संभावित उपाय हैं परन्तु वह यह नहीं जानते कि आखिर पाना क्या है, उनका लक्ष्य क्या है या सर्वोच्च प्राप्ति है क्या? सहज राजयोग इस 'कुछ' को जानने व पाने का एकमात्र शिव-प्रदत्त उपाय है। 'शिव' (शरीर) से लिपटे रहना और 'शिव' से छिटके रहना कभी भी वास्तविक 'योग' का अनुभव नहीं करा सकता।

पवित्र बनो, योगी बनो

अग्नि की लपटें हमेशा परमाग्नि 'सूरज' से योग हेतु ऊपर की ओर लपलपाती हैं; नदियां हमेशा समुद्र की दिशा में प्रवाहित हो कर उससे संयोगित होने को आतुर रहती हैं; उड़ते हुए मिट्टी के दिशाहीन कण अंत में अपने मूल स्रोत जमीन से युक्त-संयुक्त हो कर ही शान्ति पाते हैं; विषैली वायु वनस्पति जगत का संसर्ग पा कर स्वच्छ होती रहती है और आकाश अपनी विशालता को कभी भी संकुचित करता नहीं है। वैज्ञानिकों के आकलन के अनुसार आकाश में अनन्त विस्तार तक जो नक्षत्र-

सितारे फैले हुए हैं वे कुल

आकाश के मात्र 0.00000000000001 प्रतिशत स्थान में काबिज हैं। यही कारण है कि इनके आपस में टकराने की संभावना समाप्त हो जाती है। मनुष्यों की सोच भी यदि आकाश की तरह विशाल हो तो उनका आपस में मतभेद या टकराव नहीं हो सकता। ये पांच तत्व जड़ होते हुए भी कुदरती नियमों का पालन करते हैं जबकि जीवन के नियमों को भूल चुकी मनुष्यात्माओं को जब स्वयं परम पावन 'शिव' राजयोग सिखाने आते हैं, तब भी वे अलबेलापन दिखाती हैं। शिव कहते हैं, 'पवित्र बनो, योगी बनो' और मनुष्य कहते हैं 'बस कृपा कर दो, आशीर्वाद कर दो।' जहां 'काम' का उफान और संकल्पों का तूफान हो, वहां योग की स्थिति कैसे बन सकती है? उफनते दूध को गिरने से बचाने के लिए या तो जल डालने का या वायु फूंकने का या अग्नि हटाने का या बड़े बर्तन (बड़ा आन्तरिक आकाश) में दूध उबालने का कर्म करना होता है। उसी प्रकार उबल रहे मन को शान्त करने के लिए या तो ज्ञान जल के छींटे डाले जाते हैं या वायु (वातावरण) में मनसा सेवा, शुभ-भावना, शुभ-कामना के प्रकंपन फैलाने होते हैं या फिर मन को 'लौकिक-पसारा' (फिजूल की दुनियादारी) से निकाल कर शिव बाबा से योग की अंगन (अग्नि) में मगन करना होता है या बुद्धि रूपी आकाश को विशाल बनाना होता है। आज योग एक फैशन की तरह देहधारियों के द्वारा सीखा व सिखाया जा रहा है, जो पावन नहीं बनाता। आत्मा व परमात्मा से अनभिज्ञ रहते हुए किया गया कोई भी योगाभ्यास सांसारिक दुखों व अशान्ति से मुक्त कर नहीं सकता।

यह आत्मा की योग-शक्ति का ही कमाल है जो कि चैतन्य आत्मा जब जड़ शरीर में आती है तो शरीर भी चैतन्य हो उठता है। उसी प्रकार अज्ञानता से जड़ हुई आत्मा जब परमात्मा से योगयुक्त होती है तो आत्मा भी ज्ञान, गुण व शक्तियों से चैतन्य हो उठती है। ऐसी चैतन्यता परमात्मा के कपोल-कल्पित स्वरूप से योग लगाने से या जड़ मूरतों से योग लगाने से नहीं आती।

प्रतिमा की बजाए प्रतिभा का संग

आज योग सीख रहा व्यक्ति कहता है कि 'योग लगाते हुए मन एकाग्र नहीं होता।' कारण यह है कि लंबे समय तक जड़-मूर्तियों की अराधना करते हुए मन में जड़ता आ गई है, जो परम-चैतन्य शिव से योगयुक्त होने नहीं देती। लोभ, मोह, भय और चिन्ता, मन के जड़ होने के ये 4 मुख्य कारण हैं। इनमें लोभ और मोह तो 'विकार' (Vices) हैं और भय व चिन्ता 'मनोविकार' (Psychiatric disorder) हैं। उक्त चार कारणों से मुक्त हो कर यदि मन-बुद्धि परमचैतन्य परमपिता 'शिव' में एकाग्र हो कर उसके संग का अनुभव करें तो इसे ही 'योग की लवलीन अवस्था' कह सकते हैं। ईश्वरीय 'ज्ञान' ही जड़ता से चैतन्यता में लाता है। भक्त अंधविश्वास व अंधश्रद्धा से भरी मान्यताओं का संग करता है जबकि संग करना चाहिए उन देव-देवियों की प्रतिभा (गुणों) का। परमात्मा वैसा नहीं जैसा दकियानूसी मान्यताओं के वश उसे गढ़ डाला गया है बल्कि वह निराकार तो वैसा है जैसा ब्रह्मामुख से वह खुद बताता है। यह अचंभे की बात है कि परमात्मा द्वारा स्वयं दिया जा रहा अपना परिचय मनुष्य अनसुना करते हैं और गुरुओं के द्वारा खुद को परमात्मा बताये जाने को सही मानते हैं। जन्म-जन्म से पुकार रहे भक्तों को भगवान शिव कह रहे हैं कि 'लो, मैं आ गया, तुम मुझसे योगयुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा ले लो' और भक्त अलबेलेपन से गुरु की महिमा गाते हुए याचना करते हैं कि हमें ईश्वर से यह-यह प्राप्त कराओ। वह समय बीत चुका जब ईश्वर को किसी भी रूप में सीधे पुकारा जाता था। अब तो ईश्वर की आराधना भी ठेके

पर (Out-sourcing) कराई जा रही है। मनुष्यों के पतित कर्म अब ईश्वर से आंखें मिला कर वर्सा प्राप्त करने का मनोबल पैदा नहीं होने देते। समाज में अनेक धार्मिक संस्थाओं ने मानो अपने 2500 साल के पुराने माल की सेल लगा रखी है परन्तु भाग्यशाली मनुष्य तो अभी मिल रहे ताजे शक्तिवर्धक ईश्वरीय राजयोग के ज्ञान को प्राप्त कर आत्मा को शक्तिशाली बना रहे हैं। आज का मनुष्य जरूरत पर अच्छा व ताजा माल नहीं खरीदता और 'सेल' लगी हो तो बिना आवश्यकता के पुराना व घटिया माल भी खरीद लेता है।

जो पा लेता है, शांत हो जाता है

एक बच्चा अपने लौकिक पिता से कहता कम है और सुनता ज्यादा है। यह सुनना ही उसे पारिवारिक संस्कार, नियम, मर्यादा आदि का पालन सिखाता है जिससे उसका जीवन श्रेष्ठ बनता है परन्तु भक्त भगवान को अपनी सुनाते रहते हैं और सुनते बिल्कुल नहीं क्योंकि भगवान से पिता-पुत्र वाला संबंध नहीं है। 'ईश्वर बोलता नहीं है' यह कहना सही नहीं है। सही तो यह है कि 'मनुष्य ईश्वर की सुनते नहीं है'। सुनने के लिए संकल्प व बोल से चुप होकर संबंध की महसूसता के साथ उस 'परमपिता' से योगयुक्त होना होगा। जब तक कोई शिखर 'अल्लाह हो! अल्लाह हो! या हे भगवान! हे भगवान!' पुकारता है, तब तक उसे ईश्वर मिला नहीं होता। जो उसे पा लेता है, वह चुप और शान्त हो जाता है जैसे कि रोता हुआ बच्चा अपने बाप या मां की गोद में आते ही चुप हो जाता है। ईश्वर ना तो मन्दिर, गिरजाघर, मस्जिद या गुरुद्वारे में है और ना ही चार वेदों, छः वेदांगों, षट् दर्शनों, अठारह पुराणों या चौसठ तन्त्रों में ही है। अगर इनमें होता तो अब तक बहुतों को प्राप्त हो गया होता और दुख व अशान्ति समाप्त हो गई होती। वह सुख-शान्ति का दाता खुद बताता है कि वह कहाँ है और कैसे मिलता है।

राजयोग से मिलती है विकार-मुक्ति की शक्ति

सचेत आत्मा का सर्वोच्च परमात्मा के यथार्थ स्वरूप से प्रेममय सम्पर्क व संवाद राजयोग है जिसके

नित्य अभ्यास से अविनाशी प्रालम्ब की प्राप्ति होती है। आत्मा को विकारों के संक्रमण से मुक्त होने के लिए रोग-प्रतिकारक (Antidote) शक्ति चाहिए, जो कि राजयोग की विधि द्वारा परमात्मा शिव से प्राप्त होती है। भृकुटि में बैठी आत्मा शरीर को रोगाणुओं व संक्रमण (Infection) से मुक्त रखती है परन्तु निधन होते ही शरीर सड़ कर अपने मूल तत्वों में बिखर जाता है। निधन से पहले आत्म-स्वरूप व परमात्म-स्वरूप का ज्ञान व अनुभव प्राप्त करना अमरता प्रदान करता है। परमात्मा के किसी भी अयथार्थ या कपोलकल्पित स्वरूप को यूँ ही स्वीकारना और उससे स्व-उत्थान की उम्मीद करना, और उत्थान न होने पर भी सालों-साल उसकी उपासना करते रहना, आज पैदा हुए सर्वव्यापी आत्मिक पतन व अशान्ति का कारण है। जिस प्रकार औषधि का प्रयोजन रोग के समय सिद्ध होता है, उसी प्रकार योग का प्रयोजन अशान्ति के समय सिद्ध होता है।

राजयोग बनाता है महिमावान

भक्ति इष्टदेव की अराधना व महिमा है जबकि राजयोग ईश्वर के सानिध्य में ला कर शक्ति-संपन्न व महिमावान बनाता है। राजयोग अति-नैतिक (Supra-ethical) है अर्थात् यह चोर या सज्जन, दोनों को लाभ पहुंचाता है। चोर सज्जन बन जाता है और सज्जन महान-पुरुष बन जाता है। एक परिवार में हमेशा झगड़े होते रहते थे। लोहे के कबाड़ का काम करने वाला पति, चोरी के लोहे के सामान की खरीद-बिक्री करता था और शाम को शराब पीकर अपनी पत्नी व बच्चों को तंग करता था। उसकी दुखी पत्नी को एक दिन पड़ोस की माता अपने साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम ले गई। वहां उसे राजयोग का साप्ताहिक कोर्स कराया गया जिससे उसे शान्ति की अनुभूति हुई और श्रेष्ठ भविष्य बनाने का आत्मविश्वास पैदा हुआ। उसके पति को पत्नी के आचरण में बदलाव प्रभावित करने लगा। एक दिन उसकी दुकान पर पुलिस ने छापा मारा और चोरी का सामान मिलने पर उसे जेल में डाल दिया। उसकी पत्नी जब ब्रह्माकुमारी के वेश में

उससे जेल में मिलने आती, तो जेल के कर्मचारी उसका बड़ा सम्मान करते क्योंकि उन्हें स्थानीय ब्रह्माकुमारी आश्रम की बहनों से जेल में राजयोग का ज्ञान मिला हुआ था। जेल कर्मचारी उसके पति को धिक्कारते कि तू चोर है और तेरी पत्नी देवी के समान है। साथ ही उसकी पत्नी की वजह से वे उसका ध्यान भी रखते। जेल से छूटने पर वह व्यक्ति आश्रम गया और उसने भी राजयोग का ज्ञान प्राप्त किया। वह चोर से सज्जन व्यक्ति बन गया।

पुराने में ही दिव्यगुण पैदा हो जाते हैं योग से

ईश्वर से योग अतीन्द्रिय-शक्तिवर्धक 'जुड़ाव' है, जो आत्मिक पतन की प्रक्रिया को आत्मोत्थान में बदल देता है। भवन निर्माण में लगा कारीगर ईंटों का एक-दूसरे से योग कराता है; कार की असेम्बलिंग लाइन में कर्मचारी विभिन्न पार्ट-पुर्जों का योग कराते हैं; सब्जी बनाती गृहिणी सब्जी के टुकड़ों, तेल, मशालों का अग्नि के ऊपर योग कराती है। वस्तुओं के ऐसे योग एक नई वस्तु या यौगिक पदार्थ प्रदान करते हैं परन्तु जब योगेश्वर शिव पतित विकारी मनुष्यात्माओं का अपने अविनाशी निराकारी स्वरूप से योग लगवा कर उन्हें पावन बनाते हैं, तब नई वस्तु या जीव पैदा नहीं होते बल्कि पुराने में ही दिव्य गुण व शक्तियां पैदा हो जाती हैं। तब कम क्षमता वाला मनुष्य अपनी आत्मिक क्षमता या योग्यताओं को उच्च कर लेता है। अतः योग है उच्च योग्यता वाले से जुड़ कर उसके समान उच्च बनना अर्थात् सतोप्रधान आत्मिक स्थिति को प्राप्त करना। यह योग की प्रक्रिया अल्पकाल की होती है परन्तु उत्थान लंबे काल का कराती है जबकि गिरावट की प्रक्रिया लम्बे काल तक चलती है परन्तु अन्त में विनाश अल्पकाल में करा देती है। योग प्रदत्त नवरचना हमेशा वैसी ही बनी रहे, यह कुदरती-विधान नहीं है। श्रेष्ठता से निम्नता व निकृष्टता की तरफ बढ़ना और फिर ईश्वरीय मदद से आदी-मौलिक श्रेष्ठ स्थिति पुनः प्राप्त करना, यह 'कुदरती-विधान' है।

घड़ी की सूइयाँ और आत्माएँ

घड़ी की सूइयाँ 12 बजे अपनी उच्चतर खड़ी स्थिति में रहती हैं और संयुक्त (योगयुक्त) हो कर 'एक' ही मालूम पड़ती हैं और एक ही बिन्दु से जुड़ी होती हैं। जिस प्रकार बिन्दु स्थिर रहता है और सूइयाँ गतिशील रहती हैं, उसी प्रकार मनुष्य की 'बिन्दु-आत्मा' स्थिर व शरीर गतिशील रहता है। सुइयों का गिरावट में आना 'सामयिक-विधान' है। घंटे वाली सूई धीरे-धीरे गिरती है, मिनट वाली सूई कुछ तेजी से और सेकण्ड वाली सूई का गिरना तो आंखों से भी दिखता है। तीनों की तीव्रता में फर्क होता है। तीनों सूइयों का 12 घंटे में एक बार ऊपर एक साथ पहुंचना एक नियम है। मनुष्यात्माएं भी 5000 वर्ष में एक बार एक साथ ऊपर (परमधाम में) पहुंचती हैं। जब एकाग्र-मन से घड़ी की टिक-टिक सुनी जाती है तो आंखें खुली होने पर भी दृश्य गौण हो जाते हैं। उसी प्रकार जब सूक्ष्म दृष्टि ईश्वर पर टिकी होती है तो वातावरण की आवाजें व हलचल गौण हो जाती हैं। यह योग की स्थिति है।

ज्यादा महत्त्व है सम्बन्ध का

जो आत्माएं 5000 साल से इस धरा पर पाट बजाते-बजाते थक जाती हैं, उनकी थकान परमपिता शिव चल रहे पुरुषोत्तम संगमयुग पर राजयोग की विधि सिखा कर दूर करते हैं। ऐसी तरोताजा हुई आत्माओं को महाविनाश के बाद परमधाम में ज्यादा रुक कर रिक्रेश होने की आवश्यकता नहीं होती और वे भूलोक पर शुरू हो चुके सतयुग में जाकर देवी-देवता के रूप में शरीर धारण करती हैं। परन्तु जो पतित आत्माएं द्वापरयुग से इस धरा पर आईं और 'शिव' के यथार्थ स्वरूप से योगयुक्त नहीं होतीं, ऐसी थकी-हारी व विकारी आत्माओं को पहले तो धर्मराज की सजाएं भुगतनी होती हैं और फिर तरोताजा होने के लिए परमधाम में आधाकल्प का विश्राम करना होता है। विश्राम अर्थात् गहरी निद्रा। राजयोगी आत्माएं वर्तमान के मात्र एक जन्म

शिवबाबा के साथ पिता-पुत्र के 'संबंध' में आती हैं और अन्य आत्माएं 2500 साल तक अचेतन स्थिति में अनुभवरहित 'सम्पर्क' में आती हैं। तो महत्व 'संबंध' का है, 'सम्पर्क' का नहीं। अल्पकाल का संबंध भी लंबे काल के सम्पर्क से ज्यादा फलदायी है। वर्तमान में ब्रह्माकुमार-कुमारियां वंचित मनुष्यों से 'सम्पर्क' कर रहे हैं कि तुम भी अपने परमपिता को पहचानो और उनसे 'संबंध' जोड़ो, परन्तु संशय का सूक्ष्म विकार भी माया से वफादारी निभाता रहता है।

प्रभु प्रेम मिलन होता है मौन में

योग का उद्देश्य है विक्षिप्त मन को एकाग्र करना और चंचल, अशांत व विकारी वृत्तियों को शान्त-शीतल करना ताकि कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म न हो। दूसरे शब्दों में - 'आत्म-शक्ति' व 'आत्म-नियंत्रण' प्राप्त करना ताकि अपनी मौलिक सतोप्रधान अवस्था को पुनः प्राप्त किया जा सके। परमात्मा से योगयुक्त हो कर ही यह संभव है। आसन व विभिन्न कसरतों से मात्र 'शारीरिक-शक्ति' व 'स्वास्थ्य-नियंत्रण' ही प्राप्त किया जा सकता है, आत्म-शक्ति व आत्म-नियंत्रण नहीं। परमात्मा से योग लगाते समय यह आवश्यक है कि आत्मा सांसारिक ताम-झाम से मुक्त या मौन हो जाये ताकि परमात्मा की सूक्ष्म-शक्ति की किरणें या प्रकंपन व सूक्ष्म बोल अनुभव हो सकें। यदि दुनियावी संकल्प योग लगाते समय भी चल रहे हैं, तो परमात्मा से 'प्रेम-मिलन' नहीं हो सकता। इसमें वैसी स्थिति चाहिए जैसी गर्भस्थ शिशु की माता के प्रति व 'चकोर' की चन्द्रमा के प्रति होती है। जैसे बादलों के आने पर कोयल चुप हो जाती है परन्तु मेंढक टरनिं लगते हैं, वैसे ही परमात्मा के संगमयुग में अवतरित होने पर कुछ मनुष्य चुप होकर उनसे योगयुक्त हो जाते हैं, कुछ विरोधी-अवरोधी मनुष्य हाय-तौबा करते हुए टरते हैं और अन्य मनुष्य अलबेले हो देखते रहते हैं।

क्रमशः

बाबा ने मुझे डबल डॉक्टर बना दिया



■■■ ब्रह्माकुमार डॉ.जी.पी.सिंह, एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच.

मेरा लौकिक जन्म ग्राम राजपुर, मिर्जापुर (उ.प्र.) के एक किसान परिवार में हुआ था। माता-पिता अत्यन्त धर्मनिष्ठ थे। उनका बच्चों प्रति उच्च शिक्षा पर विशेष ध्यान था। धर्मनिष्ठता एवं उनके आशीर्वाद से परिवार में कई इंजीनियर, डॉक्टर और वकील बने। ईश्वरीय ज्ञान की जानकारी मुझे एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई के दौरान रीवा सेवाकेन्द्र से मिली। वहाँ ही साप्ताहिक कोर्स भी किया। डॉक्टर बनने के बाद नियमित सेवाएँ गुजरात से प्रारम्भ कीं। वहाँ सेवाकेन्द्र नजदीक न होने के बावजूद बाबा का साथ और संबंध सदा बना रहा।

ईश्वरीय ज्ञान का बीज अविनाशी

मेरा अनुभव है कि ईश्वरीय ज्ञान का बीज अविनाशी है। समय प्रमाण बीज में स्वयं विस्तार करने की और अंतिम मंजिल तक ले जाने की क्षमता है। पुरुषार्थ और साधना इसमें सहयोगी हैं। गुजरात के बाद मैं डॉक्टर पद पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कौशांबी (यू.पी.) में नियुक्त हुआ। जिस नियमित ईश्वरीय ज्ञान को तरस रहा था, उसकी शुभ घड़ी आ गई। यहीं एक निमित्त भाई के माध्यम से मेरा संपर्क दारागंज सेवाकेन्द्र से हो गया।

योग शिविर से मिली अपार खुशी

सेवाकेन्द्र से संपर्क होते हुए ही मुझे योग शिविर में आबू जाने का मौका मिला। वहाँ मधुबन में स्वर्ग जैसा वातावरण देख अन्तर्मन आनंदित हो गया। वहाँ की उच्च व्यवस्था, रहन-सहन और भाई-बहनों के चेहरों पर खुशी देख मुझे भी अपार खुशी मिली। ऐसी अनुभूति हुई मानो इन सभी से पहले भी मिला हूँ। योग शिविर में दिए गए ज्ञान ने मुझे परमात्म अवतरण का अनुभव करा दिया। ऐसा ज्ञान परमात्मा के सिवा कोई अन्य दे ही नहीं

सकता, यह निश्चय हो गया। तर्क-वितर्क की आवश्यकता ही नहीं रही। मन में पूरा विश्वास हो गया कि ब्रह्मचर्य, शुद्ध खानपान, दैवी गुणों की धारणा, नित्य प्रति ज्ञान मुरली श्रवण और अमृतवेले से रात्रि तक विधिपूर्वक कर्म करने से मनुष्य से देवता बनना सम्भव है।

चमत्कारिक अनुभव से मिली प्रेरणा

बाबा मिलन में पहली बार फरवरी, 2005 में मधुबन गया। मधुबन परिसर में पी.सी.ओ. पर फोन करने पहुँचा। वहाँ कुछ महत्वपूर्ण फोन नंबरस लिखे थे। उन नंबरस को अपने मोबाइल में फीड करने लगा। इस दौरान परमधाम की लालिमा का अनुभव हुआ। यह एक अचंभा था। वहाँ से निकल कर मैं कमल कुंज की ओर चल दिया। तब भी लालिमा का अनुभव होता रहा। बाबा ने अलग-अलग प्रकार के अनुभव अनेक आत्माओं को कराये हैं। उन्हें मैंने पढ़ा और सुना है। साक्षात्कार के समय, स्वयं ब्रह्मा बाबा को भी साधना-कक्ष का रंग लाल नजर आया था, जिसका रहस्य बाद में बाबा की समझ में आया था। बीस फरवरी को बाबा मिलन की घड़ी आयी। मैं डायमंड हॉल पहुँचकर योग करने लगा। आदरणीया दादी जी स्टेज पर पधारीं। जैसे ही दादी जी के तन में बापदादा की प्रवेशता हुई, उनकी बदली हुई आवाज में अमृतवाणी सुनी। मुरली की भाषा, बच्चों प्रति सम्बोधन, परमपिता का प्यार, देवत्व की ओर ले जाने वाला सत्य ज्ञान सुनना, जीवन को पलटाने का अवसर था।

पदान्ति के मिले कई अवसर

इस दौरान मुझे अपने कैरियर में आश्चर्यजनक पदान्ति मिली। सारा श्रेय बाबा को है, मेरी कोई योग्यता नहीं। सरकारी कोटे से मुझे सन् 2007 में स्पेशलिटी के

लिए पी.जी.डिप्लोमे में दाखिला मिला और मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, प्रयागराज से सन् 2007 में डी.सी.एच. की उपाधि मिली। फिर मेरी पदोन्नति नवजात शिशु एवम् बालरोग विशेषज्ञ के रूप में हुई और जिला महिला चिकित्सालय, प्रयागराज में नियुक्ति हुई। शिव बाबा की याद में, जिस्मानी और रूहानी डॉक्टर बनकर ईश्वरीय सेवा देता हूँ। दिल से निकलता है, 'याद

तुम्हारी कितनी प्यारी, शीतल-सी छत्रछाया है। इस छाया में बाबा हमने, बेहद का सुख पाया है।'

मेरा अनुभव है, भक्ति से अल्पकाल के लिए सुख-शान्ति मिलते हैं। परम सद्गुरु और सत् शिक्षक शिवबाबा द्वारा दिये गये ईश्वरीय ज्ञान और योग से जीवन में स्थाई अर्थात् सदाकाल के सुख और शान्ति प्राप्त हो रहे हैं। सबको ईश्वरीय आमंत्रण। ■■■

राजयोग की उपलब्धियाँ

■■■ ब्रह्माकुमारी डॉ. कुमकुम मेहरोत्रा (गाइनीकोलोजिस्ट), मुरादाबाद (उ. प्र.)

राजयोग मेडिटेशन की उपलब्धियाँ अनेक हैं। कहीं तीन वर्ष पहले मुझे ध्यान-योग का सही मतलब भी पता नहीं था और अब बाबा की प्रेरणा से अलग-अलग स्कूलों में जाकर बच्चों को मेडिटेशन सिखाना शुरू कर दिया है। पहले बहुत बार खाली समय में समझ नहीं आता था कि कैसे बोरियत दूर भगायें। अब इसकी कोई दरकार ही नहीं, परमानेंट गाइड जो साथ में है। इतनी राहें हैं सेवा की जो 24 घंटे भी कम पड़ जाते हैं।

पहले मेरी नींद 8-9 घण्टे से कम में पूरी नहीं होती थी, नींद की गोलियाँ भी खानी पड़ती थीं। अब 6 घण्टे में ही नींद पूरी हो जाती है। इन तीन सालों में नींद की दवा की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी, अमृतवेले योगाभ्यास भी होने लगा।

मुझे लगता था कि सम्मान, शरीरधारियों से मिलने की चीज है परन्तु अब समझ में आया कि सम्मान की परिभाषा क्या है। पहले घर में खाना बनाने वाली के साथ मेरा अक्सर झगड़ा हो जाता था जिसके फलस्वरूप दोनों का ही मूड अपसेट हो जाता था। अब मेरे व कर्मियों के बीच बहुत मधुर सम्बन्ध हैं। इस प्रकार जो मानसिक सन्तोष प्राप्त हुआ उसे ही स्वर्गिक आनन्द की संज्ञा दी जायेगी।

मुझे बचपन से माइग्रेन होता था जो अब 99 प्रतिशत ठीक हो चुका है। पैरों में फेशिआइटिस नामक तकलीफ थी जिसके इलाज में हर उम्मीद छोड़ चुकी थी। रूहानी सर्जन ने इस तकलीफ को 100 प्रतिशत ठीक कर दिया है।

राजयोग कोर्स करते समय मैंने स्वयं कोशिश शुरू कर दी कि कैसे अपने को मस्तक में, भ्रुकुटि में और बाबा को आकाश से परे परमधाम में देखना है। ड्राइविंग के समय मैं जैसे ही बाबा को याद करती हूँ तो एक किरण सदा मुझे मस्तक में छूते हुए साथ-साथ चलती है।

पाँच वर्ष पूर्व मेरी बेटी की डिग्री व सर्टिफिकेट्स की फाइल, जो कि मैंने बहुत सम्भाल कर रखी थी, घरभर में ढूँढ़ने से कहीं भी नहीं मिल रही थी। हमने यह मान लिया कि कहीं खो गई या फाइल चोरी हो गई। एक दिन सुबह पाँच बजे मेडिटेशन के दौरान मैंने बाबा से पूछा, प्यारे बाबा, बताइये ना, कहाँ रखी है फाइल? बाबा ने मुझे संकल्प दिया और उसी स्थान पर फाइल अंततः मिल गई।

अब बाबा की और निमित्त बहन की पालना से हमारे यहाँ डिवाइन मेडिटेशन हॉल बन गया है जिसमें सभी धर्मों के मरीज रूहानी-जिस्मानी इलाज के लिए आ-जा सकते हैं। ■■■

आओ लौट चलें

■■■ ब्रह्माकुमारी रेनु, अग्रोहा (हरियाणा)



सृष्टि रंगमंच पर उपस्थित हे आत्माओ! आओ अब लौट चलें तिमिर से उजियाले, हृद से बेहद, दुःखों से सुखों, निराशा से आशा तथा लौकिक से अलौकिक की ओर। लेकिन, इस सुखद परिवर्तन की मंगलमयी यात्रा करने के लिए हमें चलना होगा एक नई दिशा की ओर। चल तो रहे थे लेकिन अगर कदमों की रफ्तार व दिशा अब भी वही ही रहेगी तो मंजिल भी अवश्य वही ही रहेगी। अगर मंजिल व लक्ष्य बदलने की ठान ली है तो दिशा व रफ्तार भी बदलनी ही होगी।

उपभोग वृत्ति से योग वृत्ति की ओर

हमने लक्ष्य बनाया था भौतिक सुखों व साधनों को अर्जित करने का तो जीवन-यात्रा में उपभोग वृत्ति ही मुख्य हो गई थी। अब जबकि लक्ष्य अतीन्द्रिय सुखों को अर्जित करने का है तो भोग वृत्ति छूट कर सहयोग व योग वृत्ति जागृत हो गई है। कदम बढ़ चले हैं आत्मिक गुणों के संग्रह की ओर। मन के संकल्प दौड़ रहे थे लक्ष्यहीन आँधी की तरह जिनका पता ही नहीं था कि इनका आरम्भ कहाँ से हुआ और अंत कहाँ जाकर होगा। लेकिन, जैसे ही मन ने देहभान को छोड़ आत्मिक भाव की ओर संकल्प रूपी कदम बढ़ाने आरम्भ किये तो धीरे-धीरे ये कदम दिव्य उड़ान में परिवर्तित हो गए। इस उड़ान का आरम्भ आत्मिक अनुभूति से होता है और परमात्मा के अलौकिक स्वरूप पर टिक कर ही इस उड़ान को एक ठिकाना मिलता है।

जीवन-यात्रा में अर्जित क्या किया?

अन्तर्मुखी होकर, एकांत के क्षणों में, प्रकृति के निर्मल सानिध्य में तनिक स्वयं से एक प्रश्न पूछ लिया कीजिए कि इस जीवन-यात्रा को जब से आरम्भ किया,

तब से अब तक हमने अर्जित क्या किया? शैशवास्था में चेहरे पर जो निश्चल शांत भाव व पवित्र मुस्कान थी वह कहीं कामुक भाव व कटु हँसी में तो परिवर्तित नहीं हो गई? चेहरे का निर्मल व आनन्दित भाव कहीं भौतिकवाद की चकाचौंध में चिंता व उदासी में तो नहीं बदल गया? क्या यही लक्ष्य था इस जीवन-यात्रा का? आओ लौट चलें, अब लौटना होगा, भौतिक साधनों की अंधी दौड़ से हटकर, साधना के सुन्दर मार्ग की ओर। बाहरी जगत में, एक ओर भौतिकता के विशाल जंगल में स्वार्थ की काली आंधी बह रही है, अवगुणों रूपी कांटों की चुभन से दुःख रूपी लहू बह रहा है, ईर्ष्या व नफरत के सर्प फन फैलाए बैठे हैं। दूसरी ओर, देहभान की तंग गलियों में सड़ान्ध और अन्धकार है। देहभान में फँसा मानव प्रकृति द्वारा निर्मित देह, परिवार में मिले सम्बन्धों, पदार्थों पर मेरा-मेरा कहकर हक जताता जा रहा है। सत्यता तो यह है कि जब आत्मा सृष्टि रंगमंच पर आई थी तो उसके पास अपने मौलिक गुणों रूपी खजाने के अतिरिक्त कोई भी किचड़ा नहीं था। जब सर्वप्रथम प्राप्त शरीर भी अचानक आत्मा का साथ छोड़ देता है तो अन्य किसी की देह पर या वस्तु पर मेरे-मेरे का हक रखना मूर्खता नहीं तो और क्या है? यही झूठा अधिकार मनुष्य के सर्व दुःखों का यथार्थ कारण प्रतीत होता है। इन दुःखों से मुक्ति चाहिए तो हमें लौटना होगा, साधना के सुन्दर मार्ग की ओर जहाँ चारों ओर दिव्यता के सुगन्धित पुष्प खिले हुए हैं। परोपकार व शुभ भावना की मन्द-मन्द शीतल हवा बह रही है। पवित्रता की ओजस्वी आभा जगत को प्रकाशित कर रही है।

परमात्म मिलन से जागृत होती हैं सुषुप्त शक्तियाँ

जब पंछी पिंजरे में होता है तो उसके पंख महत्वहीन ही होते हैं। पिंजरे से मुक्त होते ही उसके पंख, उसके लिए अनमोल साबित होते हैं। आत्मा भी जब तक देह-भान के पिंजरे में कैद है तो आत्मिक गुणों के महत्व से अनजान ही रहती है। जैसे-जैसे देहभान रूपी पिंजरे की मेरे-मेरे रूपी सलाखें टूटती चली जाती हैं तो आत्मा स्वयं में समाए हुए सुख-शान्ति व प्रेम इत्यादि गुणों से रूबरू होने लगती है व अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो, परमात्म आकर्षण में उड़ान भरती चली जाती है। भौतिक जगत के इस नियम को तो सभी जानते हैं कि दो समान वस्तुएं एक-दूसरे की ओर आकर्षित होती हैं। देहभान युक्त व्यक्ति स्वयं को भौतिक देह समझने के कारण अन्यो की देह व वस्तुओं की तरफ आकर्षित होता जाता है। इसके विपरीत, आत्मिक भाव में स्थित व्यक्ति, स्वयं के आत्मिक गुणों व परमात्म स्वरूप की ओर वैसे ही आकर्षित होता है जैसे पूर्णिमा के चन्द्रमा को देखकर समुद्र की लहरें उछालें मारती हैं। परमज्योति शिव से मिलन मनाती आत्मा की, घूमिल पड़ी हुई शक्तियाँ, फिर से जागृत होकर अन्य मनुष्यात्माओं का भी पथ प्रकाशित करना आरम्भ कर देती हैं। सहयोग का अन्तहीन शीतल झरना बहना आरम्भ हो जाता है। जिस प्रकार खिले हुए गुलाब को देखने मात्र से ही ताजगी का, बहते हुए झरने व कल-कल करती हुई नदी को देखने मात्र से ही शीतलता का व सूर्य को देखने मात्र से ही गर्माहट का आभास होने लगता है, वैसे ही परमात्मा के सत्यम् शिवम् सुन्दरम् स्वरूप को देखते-देखते आत्मा परमानन्द की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करती चली जाती है और परमात्म गुणों को स्वयं में समाहित कर मौलिक स्वरूप की ओर फिर से लौट चलती है। ■■■■

राम-राज्य की महिमा अपार

■■■ ब्रह्माकुमार ताराचंद सैनी, तारानगर (राजस्थान)

अब शिवबाबा खुद बताते, राम-राज्य की महिमा अपार।
चलने की तुम करो तैयारी, पहले छोड़ो पांच विकार।।

रहते हैं वहाँ देवी-देवता, होता कोई शैतान नहीं।
बजती है सुख-चैन की बंसी, दुख का नाम-निशान नहीं।।
निर्मल मन और निर्मल वाणी, वहाँ कोई बेईमान नहीं।
सदा पवित्र दृष्टि रहती, बनता कोई हैवान नहीं।।
शेर-बकरी संग में विचरते, होता नहीं बकरी का शिकार।
चलने की तुम करो तैयारी, पहले छोड़ो पांच विकार।।

सोने-हीरों के महल बनते, चढ़ने को पुष्पक विमान।
सोने की मोहरें चलती, हर कोई होता है धनवान।।
दूध और घी की नदियाँ बहती, छप्पन भाँति बनते पकवान।
चीनी नहीं बनानी पड़ती, चीनी फल होता रसवान।।
मौसम सदा सुहावना रहता, कोई न होता है बीमार।
चलने की तुम करो तैयारी, पहले छोड़ो पांच विकार।।

वनस्पति से साज बजेंगे, पक्षी गीत सुनायेंगे।
कृष्ण के संग नृत्य करेंगे, उत्सव रोज मनायेंगे।।
साल डेढ़ सौ जियेंगे, फिर खुशी-खुशी से जायेंगे।
लक्ष्मी होगी वहाँ महारानी, नारायण राज चलायेंगे।।
जज-अदालत-वकील-डॉक्टर थानेदार की नहीं दरकार।
चलने की तुम करो तैयारी, पहले छोड़ो पाँच विकार।।

चिल्लाओ मत, प्रयत्न करो

ब्रह्माकुमारी रेखा सामनानी, छापरू नगर, नागपुर

मैं पिछले 28 वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी हुई हूँ। मैंने बचपन में ही ईश्वरीय ज्ञान ले लिया था। सन् 1980 में मेरी शादी हो गई और ड्रामा की भावी अनुसार, युगल सहित सन् 1990 से ही मैं सर्व ईश्वरीय धारणाओं का पालन करने लगी परन्तु बाबा से हमारा मिलन नहीं हो पा रहा था। कारण था, लौकिक में युगल अपने व्यवसाय में अकेले ही थे इसलिए वे सात-आठ दिन दुकान छोड़ नहीं पाते थे। मेरा मन बाबा मिलन के लिए उतावला होता रहता था।

एक बार एक भाई, बाबा मिलन मनाकर आये और मुझे वहाँ के अनुभव सुनाने लगे। उनका खुशियों का, सत्-चित्त-आनंदस्वरूप का अनुभव सुनकर मैं आनंद विभोर हो उठी। मुझे लगा कि मैं इसी पल बाबा मिलन के लिए चली जाऊँ। आँखों से अश्रुओं की अविरल धारा बहने लगी। भाई ने मधुबन की एक डायरी और पेन मुझे भेंट कर दिए। इससे बाबा मिलन की उत्कंठा और बढ़ गई। मैं मन ही मन बाबा को कहती गई, बाबा, अब और नहीं रहा जाता, मुझे अपने पास जल्दी बुलाइये। मैंने डायरी खोली और बाबा को पत्र लिखा। मेरे बहते अश्रुओं से डायरी का पन्ना भीग गया। कुछ समय पश्चात् मैंने खुद को संभाला और सोचा, क्या लिखा है, पढ़ तो लूँ? पढ़ने लगी तो क्या देखा कि डायरी के पन्ने के नीचे की ओर स्लोगन था, 'डोन्ट क्राई, बट ट्राई (चिल्लाओ मत, प्रयत्न करो)। वाह बाबा वाह! यह पढ़ते ही मन में हिम्मत आ गई।

घर आकर मैंने युगल के आगे बाबा मिलन में जाने की बात शुरू कर दी। वे राजी हो गए। अगले बाबा मिलन में अर्थात् सन् 1995 में हम परिवार सहित पहुँच गए। आह! क्या वर्णन करूँ उस अनुभव का! वाणी के पास शब्द नहीं जो बापदादा के साथ बीते उस समय को वर्णित कर सकें। तब से हर साल हम बाबा मिलन के लिए जाने लगे और युगल को भी अपने व्यवसाय में कोई भी दिक्कत नहीं आयी। बाबा से मिले प्यार और ज्ञान रत्नों के खजाने से अब जीवन भरपूर और आनंद में है।

■■■

जेल बनी रूहानी पाठशाला

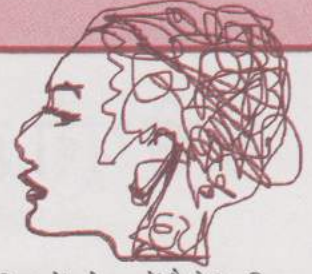
चैनसिंह, केन्द्रीय जेल, जबलपुर (म.प्र.)

मेरा जन्म मध्यप्रदेश के जिला डिंडोरी समनापुर अंतर्गत मोहगाँव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ। मुझे स्कूली शिक्षा दूसरी कक्षा तक ही प्राप्त हुई। पढ़ाई छोड़ कर घरवालों की मदद के लिए गाय-बैल चराने लगा। कुसंगति के प्रभाव में नशा भी करने लगा। कम उम्र में ही मेरी शादी हो गयी। कुछ ही दिनों में घरेलू कलह के चलते मुझसे क्रोध आवेश में हत्या हो गई। पुलिस के डर से मैं घर से फरार हो गया। लगभग 10 साल तक कई शहरों जैसे दिल्ली, कोलकाता, उड़ीसा, रायपुर इत्यादि में भटकता रहा। आखिर सन् 1992 में गिरफ्तार होकर मुझे जेल आना पड़ा और लगभग दो साल बाद जमानत मिलने से रिहा हो गया। फिर 2008 में उच्च न्यायालय, जबलपुर द्वारा मेरा फैसला होने से पुनः जेल आना पड़ा। अब मेरी हालत नशे की लत के कारण खराब रहने लगी। जेल में मुझे कपड़ों के कारखाने में काम दिया गया।

कुछ दिनों बाद साथी बंदी भाइयों के माध्यम से मुझे पता चला कि जेल में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से ईश्वरीय ज्ञान दिया जा रहा है। साथियों के आग्रह पर मैं भी वहाँ मुरली सुनने जाने लगा। वहाँ जाकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। सच्ची शान्ति मिली, जिसकी खोज में मैं आज तक भटक रहा था। दूसरे ही दिन से प्रतिज्ञा कर ली कि अब जीवन भर नशे से दूर रहूँगा। जेल में ही मुझे साप्ताहिक कोर्स कराया गया और मैं नियमित मुरली सुनने लगा एवं योग लगाने लगा। कुछ दिनों में ही मुझे दिव्य व अलौकिक अनुभूति होने लगी। अब जेल, जेल न होकर रूहानी पाठशाला बन गयी है। मुझे आत्मा व परमात्मा का सत्य परिचय मिल गया है। अब मैं सब साथी बंदियों को परमात्मा का परिचय देता हूँ। मैं हमेशा खुश एवं हर्षितमुख रहने लगा हूँ। जिसे सारी दुनिया मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरों, तीर्थ स्थानों इत्यादि में खोज रही है वो सर्वशक्तिमान स्वयं मुझे मिल गया। मेरी जन्म-जन्म की प्यास मिट गई। दिन-रात दिल से वाह! मेरा भाग्य वाह! वाह! मेरा बाबा वाह! निकलता रहता है। अब सभी बंदी भाई मुझसे ओमशान्ति कहकर बात करते हैं। अब जेल से छूटकर मुझे बाहर सभी को भगवान (परमात्मा) का सत्य परिचय देकर विश्व सेवाधारी बनना है। ■■■

विचार परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

■■■ ब्रह्माकुमार शुभ, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)



विज्ञान के शोध बताते हैं कि हमारे मन में रोजाना आने वाले विचारों की संख्या कम से कम 60 से 80 हजार तक होती है। इनमें से ज्यादातर अर्थात् 70-80% विचार नकारात्मक एवं व्यर्थ ही हैं, जो हमारे जीवन को विपरीत तरीके से प्रभावित करते हैं। इनसे अनजान हम, अपने जीवन की खराब परिस्थितियों के लिए स्वयं के भाग्य को जिम्मेदार मान लेते हैं जबकि जिम्मेदारी हमारे मन की है। मन सकारात्मक सोच ही नहीं पा रहा है क्योंकि मन अपनी वास्तविकता को ही भूल गया है। सुख-साधनों के होते हुए भी मन बहुत जगह भटक रहा है। बहुत प्रकार की नकारात्मक सूचनाओं को ग्रहण कर रहा है। कल की कुछ नकारात्मक घटनाओं और किसी के दुखदाई बोल का बारम्बार चिन्तन करके अपने को भारी कर रहा है जिससे भविष्य घोर अंधकार में जा रहा है। आज मनुष्य को यह पता ही नहीं है कि क्या विचार आना चाहिए और क्या नहीं आना चाहिए, सकारात्मक विचार क्या है और नकारात्मक विचार क्या है। दुनिया में कहावत भी है, जैसा सोचेंगे वैसे ही बनेंगे। नकारात्मक सोच से जीवन नकारात्मकता से भर चुका है।

मन का चिन्तन सबसे पहले शरीर पर असर डालता है। उसके बाद हमारा संबंध जिन मनुष्यों के साथ है उन पर असर डालता है और फिर धीरे-धीरे पूरे वातावरण में फैल जाता है। मनोविज्ञान के अनुसार, एक व्यक्ति द्वारा किए गए चिन्तन का असर कम से कम 10 व्यक्तियों तक पहुंचता है। अब सोचने का विषय है कि अगर एक व्यक्ति के चिन्तन का असर ऐसा है तो आज पूरी सृष्टि की कुल जनसंख्या के आधे भी अगर नकारात्मक सोचते हैं तो बाकी बची जनसंख्या एवं अन्य जीव बहुत सहज ही उनके प्रभाव में आकर विषैली ऊर्जा उत्पन्न कर रहे हैं। यह विषैली ऊर्जा धीरे-धीरे प्रकृति के पाँचों तत्वों को प्रभावित करते हुए संपूर्ण वातावरण में विष फैला रही है। आज हम पर्यावरण परिवर्तन के लिए जिस ग्रीन हाउस गैस (Green House Gas) एवं ग्लोबल वार्मिंग (Global Warming) के बारे में बात करते हैं उसका कुछ प्रतिशत कारण हमारी नकारात्मक सोच भी है।

अब इन नकारात्मक विचारों को बदलें कैसे? दुनिया में एक बहुत सुन्दर कहावत है, कांटे को निकालने के लिए कांटा ही चाहिए। नकारात्मक सोच रूपी काँटे को निकालने के लिए सकारात्मक सोच रूपी काँटा ही चाहिए। अगर मन में नकारात्मक विचार उत्पन्न हो रहे हैं तो तत्काल सावधान होकर उन्हें सकारात्मक दिशा में बदल देना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, अगर किसी कार्य को लेकर मेरे मन में कुछ नकारात्मक विचार चल रहे हैं अथवा पूर्व काल में प्राप्त कुछ असफलता के कारण वर्तमान में खराब विचार उत्पन्न हो रहे हैं तो उस समय यही सोचना चाहिए कि पूर्वकाल में प्राप्त असफलता मेरी ही समझ की कमी के कारण हुई है। निर्णय शक्ति, परख शक्ति, सहनशक्ति आदि कम होने के कारण ही हुई है। अतः उन सभी घटनाओं को जीवन में स्वीकार करके, उनके खराब प्रभाव को मन से हटा कर आगे बढ़ना है। कुछ परिस्थितियाँ, जो हमारे उपयोग की नहीं हैं, उनसे किनारा करना है। निजी जीवन से ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, झूठ, स्वार्थ आदि भावनाओं को निकाल कर, जीवन के मूल गुण – शांति, प्रेम, सुख और ज्ञान को धारण करना है। अगर किसी व्यक्ति के कार्य-व्यवहार को देखते हुए मन में नकारात्मक सोच अथवा दुख आ रहा है तो यही सोचना है कि हर व्यक्ति का अलग-अलग दृष्टिकोण है एवं हर कोई जीवन रूपी नाटक में अपना-अपना पार्ट बजा रहा है। किसी का पार्ट किसी से नहीं मिल सकता। जीवन में एक बात स्मरण अवश्य रखनी है कि कोई भी बात अथवा घटना बड़ी नहीं होती, उसको हमारी व्यर्थ सोच ही बड़ा बना देती है।

नकारात्मकता से मुक्त होने के लिए राजयोग का अभ्यास करना भी जरूरी है। राजयोग ही एक ऐसा माध्यम है जिससे हम अपने वास्तविक स्वरूप को जानकर, सृष्टि की सर्वोच्च शक्ति और करुणा के सागर परमपिता परमात्मा से सम्बंध जोड़ सकते हैं। राजयोग के ज्ञान से हम नकारात्मक विचारों को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाने में सफल होते हैं एवं यही ऊर्जा सृष्टि को पुनः स्वर्ग बना देती है। ■■■

कैसे पूरी हो शान्ति की तलाश?



■■■ ब्रह्माकुमारी प्रदमा, तिनसुकिया (आसाम)

मनुष्य से लेकर जानवर और पेड़-पौधों तक सभी को शान्ति अति प्रिय लगती है। ऋषि, मुनियों ने प्रकृति के शान्त वातावरण के बीच आश्रमों में रह कर, त्याग और तपस्या द्वारा मानव कल्याण के अनेक मिसाल कायम किये हैं। वैज्ञानिकों ने शान्ति में डूबकर, भौतिक सुखों के लिए अनेक खोजें की हैं। शान्ति सबको चाहिए और आज भी शान्ति की तलाश जारी है।

शान्ति प्राप्ति के लिए शान्ति सम्मेलन किये जा रहे हैं। शान्ति पर नोबेल पुरस्कार दिए जा रहे हैं लेकिन शान्ति की कमी फिर भी महसूस हो रही है। अल्पकाल के लिए शान्ति प्राप्त हो भी जाती है लेकिन स्थायी नहीं रह पाती क्योंकि शान्ति का दुश्मन है देह अभिमान और इससे जुड़े काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार। शान्ति हमारी खोयी है क्योंकि हमारे में देह होने का भान पक्का हो गया है। शान्ति का निवास देह में नहीं बल्कि आत्मा में है। शान्ति आत्मा का स्वधर्म है। शान्ति एक शक्ति है, इसका अनुभव करने के लिए, हम देह नहीं बल्कि देह को चलाने वाली चैतन्य अविनाशी आत्मा हैं, यह पाठ पक्का करना है। आत्मा जन्म-मरण के चक्कर में सतो, रजो और अन्त में जब तमो अवस्था से गुजरती है तो निज स्वरूप को भूल, देह अभिमान के वशीभूत हो अपने अन्दर की शान्ति को अनुभव नहीं कर पाती। इस पर एक कहानी है कि रानी के गले में हार था और वो उसे बाहर ढूँढ़ रही थी। मनुष्य आत्माओं की भी यही स्थिति है। शान्ति आत्मा का स्वधर्म होते हुए भी उसे बाहर पाने का प्रयास जारी है जो कि व्यर्थ है। अशान्ति से मनुष्य तब तक छूट नहीं सकते जब तक कि पाँच विकारों के कर्मबंधन से नहीं छूटे हैं। अब सवाल है, इस कर्मबंधन से छुटकारा दिलाने वाला कौन है? कोई भी मनुष्यात्मा, किसी भी मनुष्यात्मा को कर्मबंधन से छुटकारा दिला नहीं

सकती। कर्मबंधन का हिसाब-किताब तोड़ने वाले सिर्फ एक परमात्मा हैं। वे अवतरित होकर ज्ञान और योगबल से इस कर्मबंधन से छुड़ाते हैं इसलिए ही उन्हें शान्तिदाता कहा जाता है। अविनाशी शान्ति प्राप्ति के स्रोत हैं शान्ति के सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव। शान्तिधाम उनका निवास स्थान है।

शान्ति के सागर से शान्ति प्राप्त करने का आसान व सही तरीका है नियमित राजयोग का अभ्यास। राजयोग के अभ्यास के लिए सर्वप्रथम शान्त-एकान्त स्थान चुनिए। फिर स्वयं को आत्मस्वरूप में स्थित करते हुए भृकुटि में केन्द्रित हो जाइए। देह, देह के सम्बन्ध और पदार्थ विस्मृत कर परलोक की यात्रा पर मन को ले चलिए। परलोक अर्थात् शान्तिधाम में पहुँचकर वहाँ ज्योतिस्वरूप परमपिता को अन्दर के नेत्र से निहारिए। उनके सामिप्य से शान्ति की शक्ति निज आत्मा में भर लीजिए। बार-बार इस प्रकार का अभ्यास करते रहिए।

इस अभ्यास द्वारा शान्ति की इतनी शक्ति आत्मा को प्राप्त हो जाती है कि साधक अपने घर-परिवार के साथ-साथ पूरे विश्व को शान्ति का योगदान दे सकता है। शान्ति की शक्ति ईश्वरीय देन होने के कारण परम पवित्र है इसलिए अपवित्रता अर्थात् पाँच विकार जहाँ प्रवेश हैं वहाँ शान्ति कायम नहीं हो सकती। माना भी जाता है कि पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है। विज्ञान की शक्ति आराम देती है लेकिन हाहाकार भी मचा देती है परन्तु शान्ति की शक्ति सिर्फ आराम ही देती है।

राजयोग, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेन्द्रों पर निशुल्क सिखाया जाता है। शान्ति के इस महायज्ञ में आप भी शामिल होकर अपने घर-परिवार तथा विश्व में शान्ति स्थापना के महाभागी बन सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर आप सादर आमंत्रित हैं। ■■■



1. दिल्ली (लोधी रोड)- पावर सिस्टम ऑपरेशन कार्पो. लि. के युवा कर्मियों हेतु आयोजित 'राजयोग से मूल्यनिष्ठ जीवन' विषयक कार्यक्रम के उपरांत समूह चित्र में बहन शर्मिला मोदवाल, ब्र.कु. पोयूष भाई, ब्र.कु. दीपिका बहन तथा प्रतिभागी। 2. जयपुर (राजापार्क)- मेडिकल स्टूडेंट्स के लिए आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. पूनम बहन, डॉ. अरुण चोगले, राजस्थान लैब टैक्नीशियन एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष भ्राता जीतेन्द्र सिंह तथा डिवाइन पैरामेडिकल इंस्टिट्यूट के निदेशक डॉ. गणेश चौधरी। 3. जोधपुर- प्रौषकालीन बालविकास शिविर का उद्घाटन करते हुए समाजसेवी फूलकौर बहन, पार्षद बहन पायल जिनयानी, ब्र.कु. शील बहन, ब्र.कु. फूल बहन तथा ब्र.कु. शुचि बहन। 4. उदयपुर- अलविदा डायबिटीज कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं डॉ. श्रीमंत साहू, डॉ. आनंद गुप्ता, ब्र.कु. रीटा बहन तथा रजणीत सिंह सोजतिया। 5. झालावाड़- अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए यूनिनन नर्सिंग जिलाध्यक्ष भ्राता आरिफ जी, ब्र.कु. मोना बहन, महिला यूनिनन नर्सिंग जिलाध्यक्ष बहन सुशीला खान तथा अन्य। 6. भीनमाल- विश्व तम्बाकू निषेध दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं गायत्री परिवार के सदस्य भ्राता कोलीजी सोनी, भारत विकास परिषद् के प्रांतीय संरक्षक भ्राता नैनाराम चव्हाण, आनन्द गृह उद्योग के मालिक भ्राता जोगाराम चौधरी, ब्र.कु. गीता बहन तथा ब्र.कु. कीर्ति बहन। 7. भदोही- अखिल भारतीय प्रदर्शनी बस अभियान कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी बहन, ब्र.कु. वृजेश भाई तथा अन्य। 8. भादरा- मदर्स डे पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकला बहन, अपेक्स स्कूल प्रबन्धक बहन सुमन तथा अन्य।

एकमत से विजय



■■■ ब्रह्माकुमार संतोष तेलहोरे, डोंबिवली, मुम्बई

किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए आपसी एकता होना बहुत जरूरी है। एकता के लिए चाहिए आपसी स्नेह और विश्वास। स्नेह के आधार से ही सहयोगी बन पाते हैं। सहयोगी बनने के लिए अपने आपको मिटाना पड़ता है अर्थात् अपने पुराने संस्कारों को मिटाना होता है।

माला के मणकों की विशेषता यह है जो एकमत होकर, एक ही धागे में पिरोए जाते हैं। यदि कोई बात में भिन्नता हो जाती है तो उसे समाना है और विशेषता को देखना है। जैसे सूर्य को ग्रहण लगता है तो कहते हैं, नहीं देखना चाहिए, नहीं तो ग्रहचारी बैठ जाएगी। इसी प्रकार, किसी की कमी भी ग्रहण है, सबके साथ एकता में रहते उसे देख लिया तो समझो ग्रहचारी बैठ जाएगी। एकमत से कैसे विजय होती है, इस पर एक कहानी इस प्रकार है –

किसी जंगल में एक शेर रहता था जिससे सभी पशु-पक्षी बहुत डरते थे। शेर रोज किसी एक जानवर को मारकर अपना पेट भरता था। उसी जंगल में खरगोश, कछुआ, बंदर और हिरण, ये चारों पक्के और सच्चे दोस्त थे, जो हमेशा हर जानवर की मदद करने को तैयार रहते थे।

एक दिन एक भेड़िया पहली बार उस जंगल में आ पहुँचा। रास्ते में उसे एक भालू मिला। भालू ने उसे जंगल के सारे कायदे-कानून बताये और यह भी बताया कि यहाँ का राजा शेर रोज एक जानवर को मारकर खा जाता है, तुम उससे बचकर रहना। चालाक भेड़िये ने सोचा, शेर से मित्रता करके, उसका हितैषी बनकर, उसका दिल जीतना चाहिए, इससे मेरी जान तो बच ही जायेगी।

भेड़िया शेर की गुफा की तरफ गया और वहाँ सोए हुए शेर के पैर के पास बैठ गया। शेर नींद से जागा और

पास बैठे भेड़िए को खाने को उद्यत हुआ तो भेड़िया चिल्लाया, महाराज, मुझे खाने से पहले मेरी बात सुन लीजिए। शेर ने कहा, कहो, क्या कहना है? भेड़िये ने कहा, महाराज, पशुलोक से, पशु-देवता ने आपकी सेवा के लिए मुझे भेजा है। अब आपको शिकार पर जाने की कोई जरूरत नहीं है। आज से यह सेवक आपको यहीं शिकार लाकर देगा। शेर ने भेड़िये की बात मान ली।

दूसरे दिन भेड़िये ने जंगल में ढिंढोरा पिटवाया कि मैं पशुलोक से राजा शेर का सेवक बनकर आया हूँ। अब रोज एक प्राणी मेरे साथ चलकर जंगल के राजा की भूख मिटायेगा। जो इस आज्ञा को नहीं मानेगा उसे इस जंगल से बाहर कर दिया जायेगा। जंगल के सभी जानवर डर गये और भेड़िये की बात मानने को तैयार हो गये।

जानवरों के शेर के पास जाने के क्रम में एक दिन चारों मित्रों में से खरगोश की बारी आई और भेड़िया उसे अपने साथ ले जाने लगा। तभी वहाँ हिरण, बंदर और कछुआ भी आ पहुँचे और उसके साथ जाने की जिद्द करने लगे। शेर के सामने पहुँचकर चारों ने बारी-बारी अपनी बात शेर से कही। सबसे पहले खरगोश बोला, महाराज, आज मैं आपका भोजन हूँ, मुझे खा लीजिए पर इन सबको छोड़ दीजिए। फिर कछुआ बोला, महाराज, आप अकेले खरगोश को नहीं खाइये, मुझे भी खाइये, आपका पेट भर जायेगा, बंदर और हिरण को छोड़ दीजिए। तभी बंदर कहता है, महाराज, इन तीनों को छोड़ दीजिए, मैं बड़ा हूँ, मुझे अपना भोजन बना लीजिए। इतने में हिरण बोल पड़ा, महाराज, इन तीनों को छोड़ दीजिए, मैं अकेला इन तीनों के बराबर हूँ, आप मुझे अपना शिकार बना लीजिए।

इन सबकी बातें सुनकर भेड़िया कहता है, महाराज, देर ना करें, इन चारों की बातों में ना आये, एक झटके में इनको खत्म करके अपनी भूख मिटाये। तभी शेर ने चारों को अपने पास बुलाया और कहा, मैं तुम्हारी सच्ची एकता, मित्रता और त्याग देखकर बहुत खुश हुआ। मैं भूल गया था कि तुम लोगों की वजह से ही ये जंगल है। इस भेड़िये की बातों में आकर मैं भटक गया

था। आज से ये जंगल आप लोगों को सौंपकर मैं दूर जा रहा हूँ। यह कहकर शेर ने भेड़िये को अपना शिकार बनाया और दूसरी दिशा में चला गया।

कहानी का सार यही है कि जहाँ त्याग, प्रेम, एकता और दूसरों को देने की भावना हो वहाँ असंभव भी संभव हो जाता है। ■■■

ट्रिपल जैकेट ऑफ साइलेन्स

■■■ ब्रह्माकुमारी डॉ. तृप्ति, शान्तिवन

जै से एक माँ अपने बच्चे को मौसम के प्रभाव से बचाने के लिए ठण्ड में गर्म कपड़े, बरसात में रेनकोट व तपती गर्मी में स्कार्फ पहनाती है, वैसे ही हमारी शिव माँ भी माया के नित नए दुष्प्रभावों से बचाने के लिए हमें साइलेन्स का ट्रिपल जैकेट पहनाती हैं।

इस जैकेट को पहनने का तरीका है, पहले अपने शान्त स्वधर्म में स्थित हो जाएँ कि मैं एक छोटा-सा बिन्दु शान्त स्वरूप आत्मा हूँ। कुछ समय स्वयं को ऐसे शरीर से अलग अनुभव करें। फिर स्वयं को परमधाम में लाल सुनहरे प्रकाश के बीच गहन शान्ति में डूबे हुए अनुभव करें। इसके बाद, मैं शान्त स्वरूप आत्मा, शान्ति के सागर शिवबाबा के सम्मुख-समीप स्वयं को देखती रहूँ और उनमें लवलीन होते हुए शान्ति के सागर में खो जाऊँ।

शिवबाबा ने कहा है कि यदि कोई एक गुण लेकर, उसकी गहराई में जाकर, उस गुण का स्वरूप बन जाओ तो बाकी सारे गुण स्वतः ही आप में आ जाएँगे। यदि हम शान्ति का ट्रिपल जैकेट निरन्तर धारण किए रहें तो शान्ति की यह गहरी अनुभूति हम में और दिव्यगुणों को भी खींच लाएगी।

यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि ट्रिपल जैकेट पहनकर बैठ जाएँगे तो कर्म कैसे करेंगे? इसका उत्तर यह है कि इस ड्रेस को लम्बे समय तक पहने रहने के बाद जब कर्म में आएँगे तो भी यह कर्मयोगी का अहसास कराती रहेगी। बस जरूरत होगी अन्तर्मुखी हो बार-बार शान्ति की उस अनुभूति को स्मरण करने की। इससे हमारा चित्त लम्बे समय तक शान्त रहेगा और फिर जैसे ही मौका मिले, हम फिर से ट्रिपल जैकेट पहन लें। जितना-जितना देहभान रूपी वस्त्र ढीला होता जाएगा उतना जल्दी हम ट्रिपल जैकेट पहन सकेंगे। जितनी बुद्धि की लाइन क्लियर होती जाएगी, जैकेट की चमक बढ़ती जाएगी और हमारी रूहानियत औरों को आकर्षित करने लगेगी। ऐसी यह जादूई जैकेट है जिसे पहनकर ही अमृतवेला, नुमाशाम योग करें तो माया की बीमारी से दूर, कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचते जायेंगे। ■■■



1. नई दिल्ली (दरियागंज)- नवनिर्मित सेवाकेन्द्र-भवन का उद्घाटन करते हुए जी.बी.पंत हॉस्पिटल के निदेशक डॉ.संजय त्यागी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.चक्रधारी बहन तथा ब्र.कु.विमला बहन। 2. गाजियाबाद (कविनगर)- सांसद भाता वी.के.सिंह तथा बहन भारती सिंह को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.राजेश बहन, ब्र.कु.सुनिता बहन तथा अन्य। 3. ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर (गुरुग्राम)- मीडियाकर्मियों के लिए आयोजित संवाद कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन, भारतीय जन संचार संस्थान के पूर्व महानिदेशक भाता के.जी.सुरेश, वरिष्ठ पत्रकार भाता एन.के.सिंह, प्रो.दीक्षित जी, पायनियर के पूर्व संपादक भाता प्रदीप माथुर, ब्र.कु.सुशांत भाई तथा अन्य। 4. सारनाथ (वाराणसी)- जीटीसी के जवानों को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.तापोशी बहन। 5. जयपुर (सोडाला)- ब्र.कु.स्नेह बहन को 'दी बेस्ट मदर' शिल्ड देकर सम्मानित करते हुए नेशनल हाईवे अथॉरिटी के जनरल मैनेजर भाता अनिल कुमार गर्ग तथा मनी प्लॉट फाइनेंस कंपनी की उपाध्यक्षा बहन बेला पारीक। 6. हाथरस- ब्र.कु.शान्ता बहन को अपराजिता सम्मान प्रदान करते हुए जिलाधिकारी भाता प्रवीण कुमार लक्षकार। साथ में हैं डॉ.उषा गुप्ता तथा अपर जिलाधिकारी भाता ए.के.शुक्ला। 7. अलिगढ़- कमिश्नर भाता अजयदीप सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीला बहन। 8. दिल्ली (नरेला)- समाजसेवा अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गऊ रक्षा तथा विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्री भाता राजेन्द्र सिंघल, ब्र.कु.गीता बहन, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य।



1. गोला गोकर्णनाथ- विधायक भ्राता अरविन्द गिरि तथा विधायक रोमी शाहनी को आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन। 2. चौमहला (झालावाड़)- तम्बाकू निषेध दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सरपंच भ्राता प्रदीप दौसी, किराना व्यापारी संघ अध्यक्ष भ्राता संजय जैन, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य। 3. अलीगढ़ (रघुवीरपुरी)- पूर्व एस.डी.एम.भ्राता पी.एन.उपाध्याय, इंजीनियर भ्राता दर्शन सिंह तथा अन्य को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.सुनिता बहन उनके साथ। 4. टूणडला (रामनगर)- विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर निकाली गई रैली में भाग लेते हुए ब्र.कु.विजय बहन, ब्र.कु.तनु बहन। साथ में सुरक्षा देते हुए पुलिस कर्मी। 5. टिहरी-गढ़वाल- अलविदा तनाव कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मेहरचंद भाई, पूर्व राज्यमंत्री भ्राता प्रवीण भंडारी, पूर्व विधायक भ्राता विक्रम सिंह नेगी, नगरपालिका चेयरमैन बहन सीमा कृषाली तथा अन्य। 6. गुरुग्राम (सेक्टर-57)- समाजसेवा अभियान कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं ब्र.कु.सोनी बहन, ब्र.कु.मीनाक्षी बहन तथा अन्य। 7. फिरोजाबाद- 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' कार्यक्रम में बस यात्रियों को मोमेन्टो देते हुए प्राचार्य डॉ.प्रभास्कर राय। साथ में हैं ब्र.कु.सरिता बहन। 8. दिल्ली (कालकाजी)- ग्रीष्मकालीन बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में भाग लेने वाले बच्चों के साथ ब्र.कु.प्रभा बहन, ब्र.कु.सुजाता बहन तथा ब्र.कु.योगिता बहन।

आवश्यक सूचना (सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1- आपको अत्यन्त हर्ष होगा कि राजी खुशी पत्रिका भी शान्तिवन से प्रकाशित हो रही है। अतः इसका नया सदस्यता शुल्क वर्ष एक जुलाई से ही होगा। नये वर्ष 2019-20 में राजी खुशी पत्रिका का भारत में वार्षिक शुल्क 120/ रुपये तथा विदेशों में शुल्क 1200/ रुपये ही रहेगा।

2- शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल 'राजी खुशी' के नाम से मनीऑर्डर द्वारा या डाकघर से EMO भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई. मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। साथ में फोन नंबर तथा ई-मेल ID जरूर लिखें।

3- आपको ज्ञात हो कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच शान्तिवन में है।

4- अभी आप ऑनलाइन भुगतान सुविधा द्वारा भी राजी खुशी के सदस्य बन सकते हैं। बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है -

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन, IFS Code: SBIN0010638

सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367, एकाउंट का नाम : World Renewal Gyanamrit

5- राशि बैंक द्वारा जमा करने के बाद फोन या ई-मेल द्वारा सूचना देना आवश्यक है कि ये शुल्क राजी खुशी पत्रिका के लिए है।

6- राजी खुशी के ऑनलाइन भुगतान करने के बाद नीचे लिखे ई-मेल पर अपना पूरा पता और बैंक भुगतान का पूरा विवरण भेजें। डिपॉजिट केवल RTGS/NEFT/ONLINE के द्वारा ही करें।

7- डायरेक्ट पोस्ट करने वाले नये पते टाइप करके या बड़े अक्षरों में साफ-साफ अंग्रेजी में ही लिखकर भेजें।

सम्पर्क के लिए : - राजी खुशी

ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन - 307510

(आबू रोड) राजस्थान।

फोन : 02974-228125,

फैक्स : 02974-228116,

मोबाइल : 09414006904, 09414423949,
8003990013

E-mail : rajikhushi9@gmail.com,
bkbakshibhai@gmail.com

प्रकाशक

ब्र.कु. आत्मप्रकाश



सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक : 100/- आजीवन : 2,000/-

(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनी ऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510

(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription:

Bank : State Bank of India, A/c Holder Name : Gyanamrit, A/c No: 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

😊 अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र : 😊

Mobile: 09414006904, 09414423949, Email: hindigyamamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।

मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in



1.पटना (कंकड़बाग)- केन्द्रीय कानून एवं दूरसंचार मंत्री भ्राता रविशंकर प्रसाद को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रुक्मिणी बहन तथा ब्र.कु.संगीता बहन। 2.जोधपुर- केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री भ्राता गजेन्द्र सिंह शेखावत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.जयलक्ष्मी बहन। 3.जबलपुर (सैनिक सोसायटी)- केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री भ्राता प्रह्लाप पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.संगीता बहन तथा ब्र.कु.विनीता बहन। 4.मैनपुर- छत्तीसगढ़ के नगरिया विकास मंत्री डॉ.शिव डहरिया को ज्ञानामृत पत्रिका देते हुए ब्र.कु.सुमन बहन। 5.चण्डीगढ़- 'इमोशनल फिटनेस' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन। 6.जबलपुर (कटंगा कालोनी)- 'पत्रकारिता के समक्ष मूल्यों की चुनौती' विषयक सेमिनार का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ पत्रकार भ्राता रविन्द्र बाजपेयी, प्रोफेसर कमल दीक्षित, कुलपति डॉ.पी.डी.जुयाल तथा ब्र.कु.विमला बहन। 7.दिल्ली (लोधी रोड)- विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते हुए फार्मास्युटिकल साइसेज एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो.रमेश कुमार गोयल तथा ब्र.कु.पीयूष भाई। 8.हैदराबाद- यूनाइटेड थिऑलॉजिकल रिसर्च यूनिवर्सिटी के उपकुलपति डॉ.फ्रेडरिक फ्रान्सिस, नागठाणे (महाराष्ट्र) सेवाकेन्द्र प्रभारी बहन ब्र.कु.सुवर्णा को ऑनरेरी डॉक्टरेट डिग्री प्रदान करते हुए।



ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
 मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित
 राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन
 करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय
 में दूर संचार विभाग के पूर्व
 विभागाध्यक्ष भ्राता संजीव भानावत,
 ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई,
 ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन,
 ब्र.कु.प्रो.कमल दीक्षित,
 ब्र.कु.शीलू बहन, ब्र.कु.सुरांत
 भाई, ब्र.कु.शांतनु भाई तथा अन्य।



शान्तिवन (आबू रोड)-
 40वें अखिल भारतीय बाल
 व्यक्तित्व विकास शिविर का
 उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी
 दादी रत्नमोहिनी जी, राजयोगिनी
 दादी इशू जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई,
 ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.शीलू
 बहन तथा अन्य।



ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
 कृषि और ग्राम विकास प्रभाग की
 ओर से आयोजित सम्मेलन
 'स्वर्णिम भारत का आधार,
 टिकाऊ यौगिक खेती' का
 उद्घाटन करते हुए
 ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन,
 ब्र.कु.सरला बहन, शूलिनी
 विश्वविद्यालय, सोलन के कुलपति
 डॉ.पी.के.खोसला, डॉ.प्रताप मिश्रा,
 ब्र.कु.राजू भाई, ब्र.कु.बद्री विशाल
 तिवारी तथा अन्य।



ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
 न्यायविद् प्रभाग की ओर से
 आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन
 करते हुए जस्टिस
 यू.सी.माहेश्वरी, ब्र.कु.बृजमोहन
 भाई, भारत के प्रथम लोकपाल
 जस्टिस पी.सी.घोष, जस्टिस
 बी.डी.राठी, ब्र.कु.भ्राता
 बी.एल.माहेश्वरी, ब्र.कु.लता
 बहन, ब्र.कु.पुष्पा बहन,
 ब्र.कु.सन्तोष बहन तथा जस्टिस
 ए.के.श्रीवास्तव।